

आशा बालिकाधि

2680

ASHA ARCHIVES

॥ महा ॥

॥ १ ॥

ॐ नमः श्री कोलास्याये ॥ महाभिंधुसर्वनविधिमाह ॥ ॥ न्हायं भूमिभधनया
यथास गोमुन गोमयन वसचाकजातक वधिदो ॥ थनईष्टदेवतापूजा व
लिपान १ थापनायास्य गुरुमंडल दने यंचगव्य दिगुसमप्रपूजा मोह
निताधन ॥ घाउधधार्मि खाज मू लपात्र स्थापन विधिथ्यं देवपूजा
॥ भुतिधूनकात्र ॥ थन देवने आह पले जोस्य मुडावोये ॥ मुडापूजा ॥
थनकेस्वाननस्य भावना ॥ यांतु योषिता वज्रवा राहि रुपां पुष्पपातानु रूप दे
वीरुपापुरुषंतु सम्वर रूपं विचिंत्य तस्मात्तस्मिंवा स्रवीज मयुष्मा रा निता सा

॥ इहत्या ॥

॥ १ ॥

नदेवतां प्रवेस्यतु ॥ निरांजन होये ॥ धनमुद्रासः स्वांतस्य भावना ॥ स्वहृदि जम
यूषैरानितज्ञातदेवताप्रवेस्य यथाक्रमं चक्रीकुंडलकंठीरुचकमेखताभ
क्षोभ्यामिताभरत्नसंभववैराचना ॥ मोघसिद्धिरुपाश्रयिनिविचिन्त्य
तत्र तेन ज्ञानसत्त्वतथातीतं पुवे ॥ स्यादक्षोभ्यादिपरितताश्चक्रादिमु
द्रा अक्षोभ्यादिस्वभावां देवता ॥ अधिमुच्य ॥ ॥ धनभूषणनिरांजन
त्रिपतापमुद्रा अधिष्ठान ॥ ओं आइ ॥ पूजाधूपदीपसर्वदेवपुष्पन्यास
॥ प. तां. घ. लु ॥ स्वस्वमंत्रेन जाप ॥ स्वातन्त्र्यविषये ॥ पंचोपहारपूजा ॥ स्वा

॥ महा ॥
॥ २ ॥

नतने ॥ गीत ॥ हाडाभर शा सुंत्य ॥ मुद्राभूषणा ॥ गीत धर २ ॥ माना यात
चुसि न्हदये ॥ मुनाचा म्पयात भस्मन ईले ॥ ओं श्री वज्र हे हे रु रु क हुं हुं फ
ट ॥ मुद्राभूषणा ॥ ओं ओं ओं सर्व बुद्ध गा कि तीये वज्र वरा नीये व
ज्र वरा नीये हुं हुं हुं फ ट फ ट फ ट स्वाहा ॥ निज न च क्री ॥ ओं धर २
॥ ओं वज्र वैरोचनीय हुं फ ट स्वाहा ॥ गृह द तो मनो बी र च क्री क्षोभ्यात्मकं श्री वज्र सत्त्व स्य मुद्रे यं व हि ध्याया
त्मसंस्थितं ॥ कुंडल ॥ ओं वज्र धर्म समय रत्नं ॥ हुं २ आलोलिक हुं फ ट ॥ ओं ह्रीं ॥ हं हं हुं ॥ ॥ २ ॥

॥ रहस्य ॥
॥ २ ॥

हुंफट्॥ गृह्दत्तमनोवीरं कुंडलामिताभात्मकं श्रीवज्रसत्त्वस्य मुद्देयं वहिध्यात्मात्म
संस्थितं॥ कंठि॥ ओं वज्रसत्त्वस्य तमोविधमयस्त्वं रत्नध्वजं हुंफट्॥ ओं सर्वबुद्ध
आकिनीये वज्रवर्णीनीये वज्रवैरो
ठिरत्नसंभवात्मकं॥ श्रीवज्रसत्त्व
चक्र॥ ओं साश्चतपरमसास्वतरे
नमोऽहिः स्वाहा॥ ओं वोषट् हे हुं हुं होः फट् २५॥ गृह्दत्तमनोवीरं रुचकसास्व
जात्मकं वज्रसत्त्वस्य मुद्देयं वहिध्यात्मात्मसंस्थितं॥ तत्र मेव ता॥ ओं हुं ह्रीं प्रज्ञा

॥ महा ॥
॥ ३ ॥

धक हुं ॥ ओं वं हां यों ह्रीं मों ह्रीं हूं ह्रीं ॥ हुं हुं फट् ॥ गृह्णत मनो वीर अमोघ सिद्धि
त्मकं मेघनाथो वज्र सचस्य मुद्रयं वहि ध्या यात्म संस्थितः ॥ श्री वज्र देहे हर
क हुं फट् स्वाहा ॥ मंत्रेण नोपरात्र
१२ पुचंडे हुं फट् ॥ ओं कुरु २ चंडा
हुं फट् ॥ ओं त्रासये २ महालास्ये हुं
॥ ओं हूं २ वर्षाये हुं फट् ॥ ओं हर २ लंकेश्वरीये हुं फट् ॥ ओं फै २ इमदाये हुं फ
ट् ॥ ओं फट् २ ऐरावतीये हुं फट् ॥ ओं दह २ महामैत्रीये हुं फट् ॥ ओं पच २ वा

सुत्र मुंडमाता ॥ पञ्चपात्र ॥ ओं क
क्षाय हुं फट् ॥ ओं वन्द्य २ प्रभासतीये
फट् ॥ ओं शोभय २ वीरमतीये हुं फट् ॥

॥ इत्य ॥
॥ ३ ॥

युवगे हुंफट् ॥ ओं भक्ष २ सवरुधि रान्तमा ला वलं विनी सुराभक्षये हुंफट् ॥ ओं
गृह २ सन्नपाता र भुजंग संपवात्तर्जय २ स्यामा देवी ये हुंफट् ॥ ओं आक छ २ सुभ
डे हुंफट् ॥ ओं ह्रीं २ हय रूर्गे हुंफट् ॥ ओं ह्रीं २ चक्र वेगे हुंफट् ॥ ओं ह्रीं २ खंड
रो हे हुंफट् ॥ ओं ह्रीं सो गिड नी ये हुंफट् ॥ ओं ह्रीं २ चक्र वर्तिनी ये हुंफट् ॥ ओं कि
लि २ सुवी रे हुंफट् ॥ ओं सिलि २ महा बले हुंफट् ॥ ओं धिरि २ चक्र वर्तिनी ये
हुंफट् ॥ ओं हिलि २ महा देवी ये हुंफट् ॥ रव ह्रीं ग ड म रूपान् ॥ ओं नमो भगवते वीर
वीरेश्वराय त्पादि ॥ गृह दत्त मनो वीर रव ह्रीं ग ड म रूपान्त्र क भी वज्र सत्य स्य मुड

॥ महा ॥
॥ ४ ॥

पंवद्विधा याज्मसस्थितं ॥ ॥ धन एक सुख कोरवाणा देवस्तमुलाचार्यदि सक
ल संविये ॥ मात्रायात मूलं वोगा कर्ण पकानये धुन काव थ व श मि सं दु ये ॥ रवा त्व
वलि वि ये धुन काव पं ला प मुन
ह्यये ॥ चूर्ण हन काये ॥ वलि वि
न कं ज म नि का म्प संप्रवे स ॥ स्थान व
निया का काये ॥ तन्दि न म स्तार ॥ ॥ ओं नमः श्री प प्र नृ ते श्व रा य श ॥ ओं नमः श्री च ॥ ॥ ४ ॥
क्रम च राय ॥ भस्प वृत्ता राड ख राडं ग्रह वि स सि भृ ता र कामे रु शृंग भ्रामे दि च क्र

वादं प्रकृतिपरिभवं न श्रूयात्कामरेस॥ मजा शौरेन्दु वृन्दा भवतु सलिलभं. साण
रंतान्देवैवः॥ इत्ता हं सत्रपाले ~~सत्रपाले~~ रभतु भगवतं. पद्मनृत्यश्वरस्य॥ अपिचा
यासा संसारचक्रे विरचयति मित्रं. संतियोगा महेतो. साधीर्यस्य प्रसादा
विसृजति निजमुवं स्वामित्रो निष्पन्नं
त्यनाजालमुक्तो. कुर्यात्तस्यापि प
॥ ओं नमः श्रीपद्मनृत्येश्वराय ॥ ओं नमः श्रीचक्रसन्वराय॥ ॥ राममालाकाय॥
रामअधारेवी॥ तालवस्थिति॥ विश्वसरोरुह॥ श्लोक॥ नमस्तु नमामीह नमो

॥ मरुता ॥

॥ ५ ॥

हं नमो हं स्वाहा ॥ किंचित्कल्पपरिग्रह इव शाखायवद्रुह-तत्पागसहसोमि
नचिरतया पातप्रपानापसौ ॥ इत्थं सत्पथविप्रदे समुदितं चित्तं विचिंतनं नमो
विभ्यं व्योमदद्यात्प्रकंबवर्णुर्वंदे
पा ॥ हलासिन ॥ पुरुषस्य अंग
स्वेष्टादाय ॥ संवत्स लुचंताय अ
पस्तसः पालिदिचकं नमो नमो अर्घ्याचके ॥ वाक्य ॥ ओं ह्रीं प्रवर सत्कारा
यसकर्मवज्रिने सगुरुचरणोपस्थानाय श्री हेरुकाय अर्घ्यं प्रति हस्वाहा ॥ पंचो

मुदासर्वदा ॥ सममन्त्राभैरिवि ॥ तावज
केने ॥ गाढे वमि विमर्जन ॥ धनगुरु
शत शोफो स्वांतस्य ॥ प्रज्ञापायया क

॥ इत्य ॥

॥ ५ ॥

पहलपुजा दक्षशास्त्रये ॥ त्वानिविधे ॥ नजमानस्यार्थाय प्रतिअप्राप्तिंतवा
भित्तावितंतसिद्धिर्भवतुसानिधं कुरु ॥ दत्तपत्रतये ॥ नृत्येकाये ॥ नमस्ते हंत्यादि
॥ लक्ष्मीदेवी ॥ तावत्तानि ॥ हर्मिहम
संगृहेन संगृहीत अन्नजावाजरा
रूपेनोवा अरूपेनोवा संगिनोवा
संगिनोवा सर्वतत्त्वामयामहामुद्रा मंत्रपदाप्रतिष्ठापयितव्या ॥ श
गगद्वाभैरवी ॥ तावत्तानि ॥ त्रिभुवनज्वालिता ॥ श्लोक ॥ नत्वा सर्वतथागता

॥ महा ॥ गुराण शा धारा प रा र्थो गुरु श्री वज्रासन नाम भूषित ननु संसार दोषो ग्रहे ॥ अल्प
॥ ६ ॥ वृं वा बुद्धता एड म समं सत्साधनं तत्पत नाना वर्णा त था गता दि ज च ना दे हं
तथा कथ्यते ॥ एतन्मधुम मत् ॥ ताल
नां क म ल प द भ्यां सि र सि कु च युगे
शो पी र गत सि र वां शी र्ष मा र् इन्द्र मो
रि तो ना ग च र्मा त री य पा या श्री स न्च रो वी त्र भु व न वि ज यी ऽ कि नी च क व र्ति ॥
थ न रा यं ~~काये~~ ॥ स ता क्ष र ॥ ॥ थ न म स ड न च न्दे व त्पे चो स्य गुरु म स ड न

दुर्ज मान् ॥ प्र मो दित ॥ श्लोक ॥ नृत्पे
अं व कं कं ठ मा ली व ज्जाली व्यग्र पा
श ॥ वा रा ह्या श्रु टि कं ठे द्य न मि व न

॥ रहस्य ॥
॥ ६ ॥

याये॥ वलिपान १ विय॥ समंधो मत्त॥ थारिप पुजा धुन काव॥ देगु समय काये॥ वनि वि
सर्जन॥ थन भूमि शोधन॥ राग मधु मत्त॥ ताल दुर्जमान॥ वज्र मय भूमि॥ कोमा शो वि
ज्या चरे गुम राड लव॥ वज्र वा रा हि मंड
याये॥ नखा कलं खन॥ पंच गव्य नहा
तस्य भावना॥ ततो हुं लं वां निष्पाद्य
धरां विभाव्य॥ सव्य कश्चन्द्र हुं त्रयं विभाव्य॥ गुरा गण भू मे स्ति हे न नैष्ट घो न भि
हुं कार कि रौ श्व सं चोद दु स्थित ज्ञान सत्वरूपं पृथ्वी देवताया सहै कि भूनां

लस गोजा द्वा श दो द्वा श न या पुजा
ये॥ मंत्र॥ ओं भू भुवः स्वाहा॥ थन खान
पूर्वाभि मुखो कृते गन्ध मराड लवतु

॥ महा ॥
॥ ७ ॥

पितृवावद्गृह्ययापीतां सोम्यासिताम्वरां विचित्राभारणां गृहीतकनकभद्रघ-
णभयवामेतरकाद्वयामेकवक्त्रां पुरतस्थितां विभाव्य ॥ ~~यत्तु~~ ~~अर्पे~~ ~~याये~~ ॥ मंत्र ॥ ओं
ह्रीं महो देवी पृथ्वी लोकमातो सर्वात्म-
निर्योषे वज्रसत्त्वप्रजिते गृहित्वा ईदं स-
त्त्वाद्वा ॥ इति चिरुशाय ॥ ~~थ~~ ~~रुध~~ ~~पयाय~~ ॥
ज्ञानुतायिनां चर्या नया विंशोषेन भूमिपारमिता मुच ॥ यथामानवलंभयं साक्षीसिंह-
नतायिनां तथामारवर्जित्वा मराडलनिष्ययाम्यहं ॥ समन्वाहंतु मां बुद्धा असेषादि

समापूर्णा दिव्यालंकारभूषिते हारनौ पूर-
्यमराडले कर्मसुसाधये ह्रीः ह्री ह्री ह्रीं
वाक् ॥ त्वं देवी साक्षिता भूता सोमर्वबु-

॥ इत्य ॥
॥ ७ ॥

शुसस्थिता इहाहं अमुकं वज्रीवर्तनी व्यामिमराड लं जात यासर्ववृद्धा याति द्विमेनाप्य
दास्यथा ॥ अद्यमेत्यादि ॥ हं वज्र वज्री होधा ३ ॥ थनभावना वज्रता नामतं तोये ॥ विधि
थेंचतुकोशेषु पुजा पं ला पं सु त सिफं लये ॥ थनभूमी स ननुत धि स्पंजा
प ॥ मंत्र ॥ ओं वज्री भवहुं ॥ धा १० ॥ ओं वज्रबन्धनिर्गतज्वलहुं कारविसेरार
सानलं वज्री कृतं विभाव्य ॥ पं ला पं सु त ॥ थनसनाशरधा ७ पदये ॥ थनवस्तु
धारधिवासन ॥ रागमदनाद ॥ तालमाथ ॥ गन्धमराडल ॥ वज्रबासाहं मंडलयादथुस
वाफं १ तये ॥ उकिम स्वातस्य भावना ॥ नदनुभूमि मध्यानि व्याय कृते गन्धमराड लेवका

॥महा॥
॥८॥

रभावां वसुधां विभाव्य ॥ सव्यकरचंद्रं हुंकारत्रयं विचिंत्य ॥ गुणानभूमेति हननैस्तर्क
निभि हुंकारैश्च संचोदनादुत्थितज्ञानसत्वरूप ॥ पृथ्वीदेवताया सहैकीभूतापिना
सौम्यासितां वारधरां विचित्राभाराभू ॥ धितांगुहीतकनकभद्रघटवामकरक्ष्या
मेकवक्त्रां टक्की ॥ राजमुद्रया वा सपुर ॥ तः स्थितां विचिंत्य ॥ पीकमनपुजा ॥ वि
सर्जन ॥ वावये ॥ थनवहे मंडलयादधु ॥ तच्चा इपले चोयात्र ॥ थापं कितये ॥ कं
सरवोना रक्तचंदन श्रीखंडनं ॥ पंचसुत्रकावु लावतस्य ॥ भावना ॥ ओं वज्रदृष्टिमडि
निष्ठिरी कृतमराडले हुं त्रां हूं ॥ अआ इति वी जनिर्घन पंचबुद्धरूपं विचिंत्य ॥ आ-पा

॥रहस्य॥
॥८॥

निर्गुणतपुजा॥ जाप॥ मंत्र॥ ओं वज्रसुत्रमातिक्रमं हुं॥ ध्या०॥ परिक्रमतपुजा॥ वलित
पं० ला० पं० सु० ता॥ धनसुत्राधिस्थान॥ मंत्रं वं अ० आ० अ० अ० स्वाहा॥ ॥ धनं नैऋत्यस० आचा
र्य० ईशानस० उत्तरसाधकचोस्यं धि
॥ ओं अमो न्यानुगता सर्वधर्मा पास्य
धर्मा॥ ओं वज्रसत्यं हुं॥ इति सुत्रवन॥ ध
निस्यंपुजा॥ विसर्जन॥ पात्रलिकाये॥ सुत्रपातन॥ गीत॥ रागता॥ तालजती॥ पंचसु
त्र॥ धनआचार्यन० वज्रपं० ठजोस्य० नाभिस० सुत्रदिचक्रं० वज्रवाणहिमंडलस० सुत्र

॥महा॥
॥५॥

धामे ॥ ज्ञः ज्ञः ज्ञः ॥ ध्यापदपंकया ॥ पश्चिमस मुलाचार्य पूर्वस उत्तरसाधक ॥ दक्षि
नस मुलाचार्य उत्तरस उत्तरसाधक ॥ सुत्रपातनमंत्र ॥ ओं वज्रमुत्रमातिक्रमं हुं
॥ आकाससप्तपो २ कोत सुत्रपो २ ध्याने
सुत्रमालको ध्याये ॥ ध्याये ॥ धन
कमहाकोट सर्वदुष्टविघ्नां तका
॥ वज्रमुद्र वज्रकीलये माकोटये २ हुं फ ह
सं ह चाक सुत्रकाये ॥ धननकिराणा विधि ध्यं पुजा ॥ धुनिधूनकाय नकिरंतिनाम

दनाव नाभितर्मथाये थनमंडलम
दधुसनकिरंताये ॥ मंत्र ॥ ओं वज्रांत
नांकाय वाकचित्त कीलये २ हुं फ ह
धनकीराणास सुत्रनचिस्यं इसातानि

॥१६स्य॥
॥५॥

॥ मण्डलया दधुस. पंचरत्न. लुबकि. बहचकि दुधने ॥ थन. थागुरु पिंतिह
सित. हस्तपुजायास्य. रक्त पोतास. लवल्हाये ॥ थन निर्मात चक्र मंडल चोये ॥
कुमाशा विज्या चके गु मंडल तं चोये ॥ त्रिकोनं त्रिदलं पंचत द्वा स्रवेद पत्रक
षट्कोशां वतुलं चैव चतुष्पस्थिदला न्वितं ॥ नञ्जा वनिन तथा न्चाना द्विषेच
विधिना वुधै रतिगुह्यतमं चक्रं वज्र सत्वरगुणाश्रय ॥ मण्डल चोये ॥ गी
त ॥ राग मधुमता ॥ ताल दुर्जमान ॥ लक्ष्मी शन ॥ शनि ह्नु पातन विधि ॥ थन मंड
लस. स्वाननस्य भावना ॥ ओम्ब ह्दीज मयुखा ह्नु प्रा चक्रो शादि देवता मण्डल

॥ महा ॥
॥ १० ॥

शक्तेषु चो प्रवेसयत् ॥ आ धूष निरांजन लोहाग्नि रक्षा पुन भावना ॥ ओं तिर्मान
चक्र स्थित वंकार रस्मि मालाभिः ॥ कनिष्ठ भुवन वर्तिनी ज्ञान देवती मा रुष्य
समय देव त्पन्न भावयत् ॥ फें ३ ॥ ओं आः ह्रीं कजु वा रा ही प्रवर मस्का
राय अर्घ्य आचमनं प्रोक्ष मशां प्रति
यके स्वां नं वाय मा ॥ कुमारी या गु
बुद्ध शाकिनी यवजु पुष्पे आः हुं फ ह्स्वा हा ॥ ओं वज्र वरानी ये वज्र पुष्पे आः हुं फ
ह्स्वा हा ॥ ओं वज्र वैरोचनी ये वज्र पुष्पे आः हुं फ ह्स्वा हा ॥ मन्त्रे ॥ ओं शाकिनी ये

॥ हस्त ॥
॥ १० ॥

वज्रविद्याशंजनमोस्तुतेत्यादीव॥ निगंजन लोहाग्निश्चा॥ यथाविधिधूपजाजाप
येधर्मा सिफलुये सताश्चा॥ इति देवी अधिवाहनविधि॥ धनपंचकुंभघातत्वा
हपलेचोये निष्पं पलेपातिं स्वा
पीठायनमः॥ म॥ ओं श्री हतपीठय
द॥ ओं जालंधरी पीठायनमः॥ प॥ ओं
नचक्रायनमः॥ इ॥ ओं धर्मचक्रायनमः॥ वा॥ ओं संभोगचक्रायनमः॥ नै॥ ओं महा
सुखचक्रायनमः॥ अ॥ पंचोपचारपूजा॥ तयेतकितये॥ कुंभसधूपफये॥ ओं आहुं॥

॥महा॥
॥१२॥

बीजचोये॥ हं वं यं रं लं॥ पंचगधनकुंभसनागचोये॥ ओंतदुपरीवंकारजंवरुणास्वभा
वकुण्डलं॥ अर्धचन्द्रचोये॥ ओंततुभ्यंतरे हं कारजं वोधिचिज्ज्ञानामृतं विभाज्य॥ स्वा
नमालाकोरवायके॥ ओं आ हं॥ थ्व
ये॥ त्रिकोणाचोये दथुस॥ हं वं ह्रीं॥
ओं अमृते २ अमृतसम्भवे ए ऐ हि अ
कुम्भस्थापनविधि॥ थनगीत॥ रागगंधाभैरवी॥ तालरुप॥ गोकुदहन॥ स्वानतस्यं
भावना॥ ओंतत्रः षट्कुलनागस्वभावं अष्टदलकमलोत्परिसर्वरष्टवंकारजं व

थने॥ ओं हः हो ह्रीं अखं स्वाहा॥ बीजचो
स्थापनयाये॥ ओं नमो भगवते मामकी
अमृतं प्रवेशय ह्रीः हं आ ओं वं॥ इति

॥१२॥
॥१२॥

वज्रपुष्पे आः हुं फ ह्वा हा ॥ पू ॥ ओं रा मा ये वज्र ॥ द ॥ ओं ख रा डे हा ये वज्र ॥ प ॥
ओं रु पि नी ये वज्र ॥ उ ॥ ~~थ ने च उ द ल स~~ ॥ ओं वं वज्र वा रा ही ये वज्र ॥ पू ॥ ओं शं या
मि नी ये वज्र ॥ ई ॥ ओं ईं मों मो हि नी ॥ ये वज्र ॥ वा ॥ ओं ईं ईं संचा रि नी ये वज्र ॥
॥ प ॥ ओं हुं हुं संत्रा स नी ये वज्र ॥ नै ॥ ओं फ ह् च रि ड का ये ॥ द ॥ ओं ओं डि
या ने वज्र ॥ पू ॥ ओं पू र्ण मि रि ये वज्र ॥ ॥ उ ॥ ओं का म रु पि नी ये वज्र ॥ प ॥ ओं
श्री ह्त का य वज्र ॥ द ॥ ओं ध र्म का य वज्र ॥ ई ॥ ओं सं भो ग का य वज्र ॥ वा ॥ ओं निर्मा
न का य वज्र ॥ नै ॥ ओं न हा सु ख का य वज्र ॥ अ ॥ ओं न दा व र्त्त नी य वज्र ॥ पू ॥ ओं भ

॥ महा ॥
॥ ११ ॥

शायकजु० ॥ ६ ॥ ओं जयाये० ॥ प ॥ ओं सौ म्पायकजु० ॥ ३ ॥ धनगुरुमंडलवलि देगु
समच रजमशडलनिगुलिं नार्पं पुजायाये ॥ गीन ॥ रागभैरवी ॥ ताल एकताल ॥ नि
र्मातादि ॥ स्वाततस्यभावना ॥ ओं इ
वर्षमुंच ईं स्वाहा ॥ या निर्माता रिम
नासिनावा प्रपाति इत शिलक म
कालतिनरतनू मल्लेशी जिनेत्रा कोला स्या कस देवी न भवति सहजानन्द त्वंदनी
या ॥ तर्पसा ॥ ओं अजाः हुं फू ह्त्वादि० ॥ धनधूप ॥ ओं भगवती श्री हेरुक वज्रदेवी

॥ १६ स्प ॥
॥ ११ ॥

रुणामण्डलं स्वभावं दशाडनन्यतरे हुंकारं बोधितज्ञानामृतं निभाव्य ॥ थनकुं
भरोधन ॥ ओं हुंकारे हने वार्ण होकार गन्धनासनं हुंकारे बीज इतत्तु अकारे शाऽ
मृतकारं तु समयेत् ॥ ततोपरि ओं आ हुं इमीमालाज्ञानामृतमानीय तत्रै
बलिनं चितयेत् ॥ ओं हुं वं यं रं लं वं कारं जातं ग्वक दहनधिमुमास्पबोधि
चित्तज्ञानामृतं विभाव्य ॥ थनधूपनि रं जनलो हस्तिरक्षा विधि थं पूजा ॥
पुष्पत्यास ॥ ओं इति दानन्दे हुं फट् जः सर्वानन्दयकं मध्यवर्षमुंचद्दीः स्वाहा ॥ म
भ्य ॥ ओं आनन्दे हुं फट् ॥ पू ॥ ओं परमानन्दे हुं फट् ॥ द ॥ ओं विरमानन्दे हुं फट् ॥ प

महा

॥१३॥

॥ ओं स ह जानन्दे हुं फ २ ॥ ३ ॥ ति फं लु ये ॥ पं ला धं लु न ॥ ओं नी ल नी ले जि न ला भा
य अ शो भ्य संग संगि नी भ त्ता हं त्वां न म स्या मी अ क्ष या भ व मा म की ॥ ध न य द् च क्र म
रा ड ल म . पु बा कि फ १ न ये ग्व च ग्व
जु व र्णा नी ये व जु वै रो च नी ये . हुं ३ फ २
॥ पू ॥ ओं शं या मि नी ये हुं फ २ ॥ ३ ॥
सं चारि नी ये हुं फ २ ॥ प ॥ ओं हुं हुं सं त्रा स नी ये हुं २ फ २ ॥ नै ॥ ओं फ २ २ च रि ड का ये
हुं २ फ २ ॥ अ ॥ थ न य व च . य द् यो मि नी पू जा वि धि थ्यं ॥ गि न रा ग क र्णा दि ॥ ता

॥ १३ ॥

॥ १३ ॥

लक्ष्मण ॥ बद्धयोगिनी ॥ ॥ यतः सगवतः क्लेशस्थापना ॥ गीत ॥ रागमञ्जाद ॥
तालमाथ ॥ शशियाकिररा ॥ स्नानतस्य ॥ भावना ॥ ओं वज्रामृतोदकं ठठहुं त
त्रे महान्तरे वज्रवाराष्ट्रा अमृतज
धारणामंत्रदेवताचक्रं च ज्ञानसत्त्वमा
जलरूपं विभाव्य ॥ आ. पा. पु. लोहा
घं. लु. त. फलाभीषेक ॥ यतः शार्पिण्य ॥ स्वेनेयात ॥ आइपदेनेचास्यं पलेपतिं स्नान
बोये ॥ ओं वारुणी देवी अमृतसम्भवे जयवाहिनी ॥ इनमद्मीः हुंफ इवजुपुष्पं प्रति

॥ महा ॥
॥ १४ ॥

दत्ताष्टा ॥ मध्ये ॥ ओं आनन्दे इं फट् ॥ त्यादि ॥ पूर्ववत् ॥ पं ला ॥ यं सु न ॥ धूप फये
ओं आः इं ॥ सिं धू न ॥ दु ने वी ज चो ये ॥ इं वं पि ने अष्ट कू ल ना ग चो ये ॥ ओं त दु परि वं
का र्जं व रु रा स्त्र भा व कुं रा ड लं ॥ अर्द्ध
धि चि त्त ता ना मृ तं वि भा व्य ॥ स्नान मा
ओं इः दो द्वीं अ रं स्वा श ॥ धा प ना या
भं ज न ॥ स्नान त स्यं ॥ भा व ना ॥ ओं अष्ट द ल क म ल म भ्य स्थ वं का रो ज्ज व वा रु रा णी दे वी
वा र को म र्मी ॥ प्र भा अष्टा द श भू जा ना ना प्र द श कृ तं र व ड् ड पा श ॥ इ श सर्वे क पा ल कु लि

॥ १५ ॥
॥ १४ ॥

सत्त्वजान्तथा गजतथा घराढानवपंच सप्रदाफे एकधनुपा शंखबद्धांगसकेमंड
लुधांसुरमुंगलवीनाचगनयन्तिचोतरे कुलेनवज्जोव सपन्नात्रिनेत्रासुरासुन्दरी
मदिशरचितासर्वादिभूताश्चसर्व
वीर्यातमानष्ट अमृते अष्टदेवीस
ताय॥ ओं आः हुं नैरात्मा सूर्यमराड
रतेवर्णा त्यादि॥ तदुपरिनतवरुणामराड लंबंकारे नवरुणास्वावकुंडंतद्रुमे॥
ओं नमो वारुणी देवी सर्वसंकरी ए ए प्रवे शय २ एकमुषमहादुती मकार्यक

॥ महा ॥
॥ १५ ॥

रिष्यामि आगच्छ २ श्री यंकुरु विजय स्वाहा ॥ आपाधुप लोहाग्नि रक्षा ॥ शोधन ॥ दधु
 सप्तकोश चोये ॥ हुं वं चोये ॥ हुं कारेणाशोभ्यं वं कारेणावाहणी भावयत ॥ परिक
 मत पूजा ॥ पुष्प त्याग ॥ ओं त्रविन्दानंदे ॥ हुं फट् ॥ सर्वानन्दाय मय वं ख मुंच २ ह्रीं
 त्वाहा ॥ ओं आनन्दे हुं फट् ॥ ओं परमा
 नन्दे हुं फट् ॥ ओं चतुरानन्दे हुं फट् ॥ हुं फट् ॥ सर्वानन्दाय मय वं ख मुंच २ ह्रीं
 नंदे हुं ॥ ओं विरूतं नंदे हुं फट् ॥ ओं महजा
 पं. ला. धं. लु ॥ नील नीलजिनाभाय अ
 शोभ्य संग संगित ॥ भक्त्या हं चाम हं याच अशया भवमा मकीं ॥ नर्यन ॥ ये धर्मा कला
 भिद्येक ॥ दक्षणा शनाशर ॥ धन हस्त पूजा ॥ निष्यं मात ॥ वाम कमल मध्ये रक्त पद्म

॥ इत्य ॥
॥ १५ ॥

पंचदलं ध्यात्वा ॥ लाक्ष्मिस्तस्मान्नवाये ॥ ओं वं वज्रवा राही हुंफ ह ॥ ओं हां यां या मिनी
ये हुंफ ह ॥ ओं ह्रीं मोहिनी ये हुंफ ह ॥ ओं ह्रीं संचारिणी ये हुंफ ह ॥ ओं हुं हुं संचा
सिनी ये हुंफ ह ॥ ओं फ ह र च शिडि का
मो ह्रीं वैरोचनाय स्वाहा ॥ ओं स्वाहा ॥
हेरल संभवाय स्वाहा ॥ ओं हो वज्र
जाय स्वाहा ॥ पंचोपहार पूजा ॥ करमध्य मुद्रि स्थापयित्वा ॥ स्तुति ॥ यामिन्या व
लु मोहिनी भगवती ॥ संचारिनी सर्वदामंत्रा सिन्या स्तथा परा सुविमला योगेश्वरी

॥महा॥
॥१६॥

चशिडका॥ चत्वारो भूजमेकस्वाननपरा म्यामसितागोरिनी। स्यामाधूमुसधूसरा
सतततं वन्दे पदं तां दवं॥ लाहानसचो न गुत्थान पात्रसतये॥ इति इस्तपूजा॥ थन
पात्रनिजोदं पूजा॥ गीत॥ महापंच
ने प्रक्षालयत्॥ वाक्य॥ ओं आहुं॥
त्रमधिवासय स्वाहा॥ इत्यन्दनन
॥ पात्रया यत्कुरात स्वाधोये॥ ओं हावजु करोटकाय हुं फ इ स्वाहा॥ ओं वजु करोट
काय हुं फ इ स्वाहा॥ ओं समय करोटकाय हुं फ इ स्वाहा॥ ओं विसमय करोटका

मान॥ कलोशोदक पंचगव्य पंचामृ
धूप फ येमन्त्र॥ ओं सर्वबुद्धाकिनीपा
खकोशाचोय॥ मध्यस॥ हुं वं॥ लिखेत्

॥रहस्य॥
॥१६॥

य इं फट् स्वाहा ॥ ओं बोधिचित्तमृतभाराडे इं फट् स्वाहा ॥ ~~थन. ला. न्या. चि. चा. त~~
~~ये वाक्ये ॥ ओं वुं आं जिं खं इं ॥ थ्वतये वाक्ये ॥ ओं सर्वतथागतचिंतामृतधारे स्वाहा~~
~~थन परिक्रमन पूजा. पात्रदे द्याये ॥ स्वा~~ नतस्यं भावना ॥ तत्रः शून्यतां भावयेत्
~~॥ रुटितिकंकारेण कपालमध्ये मांका~~ रणामांमकि अष्टादशभुजा रक्तवर्णा
~~मेकमुष्णं खड्गवानाकुशसव्यकपा~~ लकुलिसं वजातथागडायथा घंठा
~~नवमंत्रवाप्रदा ॥ फट्का धनुषां च खट्वांग सकलमण्डल सुलमुंगलवीनाच~~
~~गनयंति चोतरेकुरेन वयावन संपन्ना त्रिनेत्रा सुसुंदरी. मदितारुटिता सर्वेन~~

॥सहा॥
॥७॥

दिभूताचसर्वगा॥ ओं हः होः झींः अखं स्वाहा॥ ओं हूँ हरे वरुणा हो हूँ गंधनासनं
ह्रीं ह्रीं वीजं हंताच अकारेण अमृते अमृतं प्रवेसयेत्तुं॥ धनं गह्वरमुद्रा त्रिकोणाचो
ये॥ ततो भगवन्नुवादि मंत्रेणामंत्रं या
मृतसंभवे सर्वावेसंकरा अमृतप्रवे
सानवलिस्थापना पूजा निघ्नं॥ गीत
र्यनृत्य॥ पूर्व॥ भावना॥ पूर्ववत्सायणी पीता अकार वीजं प्रयोगक्षत्रं असितांगभौवं
नागकेशरश्मक्षमहापद्मनागं विभाव्य॥ तिस्रं नमो ह्यसिरश्म॥ विधिर्धूप पूजा धूप

॥इहस्प॥
॥७॥

कर्पूरः भुगुतिः हितो धो॥ आकर्षण॥ वृक्षायणी वृक्षलोकः अवतारः सिद्धिं इष्टं
स्वाहा॥ पुष्पत्यास॥ ओम् इन्द्राय स्वाहा॥ ओम् चन्द्राय स्वाहा॥ पं. ला. धं. सु. त
ओम् नमो भगवते वज्रवाणाय इष्टं
स्वाहा॥ ये धर्मा फलानि यकः पथिका
दुष्टभयानकं उद्देकेति विरूपाक्षः
इष्टं इष्टं इष्टं स्वाहा॥ श्लोकः॥ चण्डोऽयं भयभीकः सुरपतिः दग्धनिपृष्टस्थितिः वंज
तर्जनिकादि दण्ड शततं पीतं ततो वासुकी॥ सुवंसप्तफणो घनो जशधरः चण्डो

॥ महा ॥
॥ १८ ॥

ग्रनामामहत्शुक्कोरौडमहर्द्विकागजमुखः प्राच्यांसि रायाश्रितः ॥ १ ॥ कवर्गजाते
॥ उत्तरेभावेना ॥ उत्तोरौडायणी सीता यंकारबीजः कोलागिरीक्षत्रचन्द्रभैरवः
पुनारद्वयः शंखपालनागराजः विभाव्यः ॥ निरांजनः लोहागिरिः ॥
विधिर्धूपजाः धूपः गुंगुः भुगुनिः लाथो ॥ आकर्षणः ॥ ओं रुद्रायणी
सुरलोकः अवतर २ सीधुः हुंफट् स्वाहा ॥ पुष्पन्यासः ॥ ओं कुबेराय स्वा
हा ॥ ओं गङ्गाय स्वाहा ॥ पंजा पस्तुत ॥ ओं नमो भगवते अपराजिते त्रैलोक्य
मानरे हुं हुंफट् ॥ जापमंत्रः ॥ ओं फंफट् रुद्राय नमः स्वाहा ॥ वेधर्मा फलाभीषेकः

॥ १८ ॥
॥ १८ ॥

पथिकानि ॥ ओं ह्रीं नीलजिमुतन्यादि ॥ ओक ॥ यक्षे मो निधि संस्थितां प्यभयद पी
तागदाभिर्युतं रक्तसभक उतर घुड घुडिं चक्रे साथा घुर्णितः ॥ श्रीबोधि इमदम्भ
कोटगामुष श्रीतत्त्वसामं करोः नित्यं
महत् ॥ २ ॥ चवर्गजाते ॥ पश्चिमे ॥ भा
तकारबीजं ज्वाला कूलाक्षत्रवरुणा
हा ॥ विधि थं पूजा ॥ धूप कुंकुम ॥ अगुति गुन्या लाथो ॥ आकर्षण ॥ ओं इन्द्राय
शेषसुरलोक अवतर २ शी घुं हुं फ ह्र स्वाहा ॥ पुष्पन्यास ॥ ओं वरुणाय स्वाहा

॥ महा ॥ ॥ ओं ज्वालां कूलाय स्वाहा ॥ फं ला घं सु ज ॥ ओं तमो भावते सर्वभूतभया बहे
॥ १५ ॥ महा वज्रे हं फं ॥ जाय ॥ ओं फं फं इन्द्राय शैतमः स्वाहा ॥ ये धर्मा फं ला भीषक
पथिका वलि ॥ ओं ह्रीं नीलजिमुत
नो भय कर सव्या रुपा सान्विता ह
हिक कोटकः ॥ घोरं गजनिवारिदत्त
तनापिम नुरयुता सौभा कृतिभाभरा ॥ ३ ॥ तवर्गजाते ॥ दक्षिणे ॥ भावना ॥ दक्षि
रो बा रा ही च कारवी जं कपिल भैरवं कलंक क्षत्रं चूटक दृश कुलीक नागं भावय

त्यादि ॥ श्लोक ॥ भुक्ते जिह्वा गजा ह
द्विनु बरुणास्तथा फतिपाते स्यामां
मुदितो ज्वालां कूलाय श्विमे सा शोक

॥ १६ ॥

न॥ आ. पा. नि. लोहागिस्ता॥ विधिः पूजा॥ धूपं अगुः भुगुनि. पंचपता. लाथ्व
आकर्षणा॥ ओं वा रा ही भुव लोक. अवतर २ शी घुं हं फू ह स्वाहा॥ पुष्प न्यास॥ ओं य
माय स्वाहा॥ ओं कं वं कं भै वाय स्वाहा॥ पं. ता. घं. लु. न॥ ओं नमो वज्रासने अ
जिते अपराजिते वसंकाणिनेत्र भाम
ह्ये नमः स्वाहा॥ ये धर्मा. फलाभीषेक.
त्यादि॥ श्लोक॥ याम्यां कृषाय मापी धात्मक भिन. दराउ बिपासं सदा. आ
रुढा महिषं ततो विधवरो प्राप्ते हि जिह्वाभिप॥ कर्ता शक्रमवर्तक प्रतिदिन.

॥महा॥
॥२०॥

चूतं कां कामहान्. ज्वालां कूलकुलादकर्तवदनो. रक्षकरकोतथा ॥४॥ ~~द्वर्गजा~~
ने ॥ ~~अग्नेभावेना~~ ॥ अग्नेकौमारीरक्ता. कंकारबीज. अनुदहामक्षेत्र. क्रोढभैरव
कलंकद्वक्ष. महापद्मनागं विचिंत्य
धूप. नक्ति. भुगुति. खे. ता. ह्याश्च
क. अवतर २ शी घुं हुं फट् स्वाहा ॥
तु दहामाय स्वाहा ॥ पं. ता. घं. स्तुत ॥ ओं रोषणी शोषनी क्रोधनी कारी ये हुं
फट् ॥ जापमंत्र ॥ ओं फे फट् कौमायै नमः स्वाहा ॥ श्लोक ॥ अग्नेयादहनकमराड

॥आ. पा. नि. लो. हा. विधि. थं पूजा ॥

॥आकर्षणा ॥ ओं कौमारिको लज्जो

पुष्पन्यास ॥ ओं अग्ने स्वाहा ॥ ओं अ

॥१६॥
॥२०॥

लधरं मंत्राक्षमाता चिता. रक्तद्वयनतो मृना रथवरो. नग्नो मदापप्रक. **॥** घोरो
चानिंधवरं तनोगजमुखा. हासदृहासो महान्. रक्तभैटिकं जसौ शिवसरा.
अनुट हासं पृथु. **॥ ५ ॥** पवर्गजाने ने
टकार बीजं जयंति क्षत्रं उन्मत्तभोर
॥ ॥ आ. पा. नि. लो. हा. **॥** विधि ध्यं पू
तामधि. ला. ध्व. **॥** आकर्षसा. **॥** वैष्णवी लोक. अवतरति घुं हं फट् स्वाहा
॥ पुष्पमास. **॥** ओ नैऋत्य त्वाहा. **॥** ओं लक्ष्मी वन हूता मनाय स्वाहा. **॥** पं. ला. धं

॥ महा ॥
॥ २१ ॥

स्तुत ॥ ओं संत्रासनी मारिनी सुप्रभेदनी पराजय हं फट् ॥ जाप मंत्र ॥ ओं फेंफ
ट् वैष्णवी नमस्त्वाहा ॥ ये धर्मा फलाभीषेक पथिकावली ॥ ओं ह्रीं नीलजिह्वुत
संत्यादि ॥ श्लोक ॥ कृष्णामष्टक
माण्डशिखिनिवहृणा विषधरं शंता
कुरु २ कर्पूरकं महान् संवर्द्धन
दा ॥ ६ ॥ यकर्मजाते ॥ वायुव्यभावना ॥ वायुव्यचामुण्डा रुक्तेन पंक्तार्वीजं देवी
कोलागिशिखन संसारभैरव उदुम्बरवृक्ष वासुकिनागं विभावयेत् ॥ आ-पा

॥ रहस्य ॥
॥ २१ ॥

नि.लोहा॥विधिध्वं पूजा॥भुगुति.सि.ह.मो.ह.नि.ला.ध्व॥आकर्षण॥ओं.चा.मुं.डे.
चराड.लोका.अवतर.२.सि.घुं.हुं.फ.ह्.स्वा.हा॥पुष्प.न्या.स॥ओं.वा.यु.व्ये.स्वा.हा॥ओं.
घो.रां.ध.का.रा.य.स्वा.हा॥पं.ला.घं.सु.
म्भ.नी.मो.ह.नी.हुं.फ.ह्.स्वा.हा॥जा.प.मं.
ये.ध.र्मा.फ.ला.भी.षे.क.प.थि.का.व.ली.
र.भु.भुं.कु.लं.गा.म.नो.वा.यु.व्यां.कु.लि.तो.म.हो.ग.प.ति.कू.रो.म.हा.क.र्षू.र॥मे.घो.नि.त्य.
व.र्त.को.थ.ह.रि.तो.घो.रा.मृ.गा.स्या.म.हा.न्.भा.ते.भि.ति.क.रा.ज.न.इ.म.ग.ता.घो.रा.न्ध.का.

॥ महा ॥
॥ २२ ॥

रं वस्यतु ॥ १ ॥ शर्वगजाने ॥ ईशाने भावना ॥ ऐशाने महा लक्ष्मी श्वेता शकार बीजं च
रीक्षत्रं भिषगाभैरवं पतक वृक्षः तक्षक नागं विभाव्य ॥ आ पा नि तो हा ॥ विधि
धूप पूजा ॥ धूप कस्तुरी वाल भुगुनि ॥ स्या व जि ला ध्व ॥ आकर्षा ॥ ओं म
हा लक्ष्मि सुर लोक अवतर शसि ॥ प्रं इं फ ड् स्वा हा ॥ पुष्प न्यास ॥ ओं ईश
नाय स्वा हा ॥ ओं कितिकिजिता ॥ लवाय स्वा हा ॥ पं ला धं सु न ॥ ओ
क्नु वा श हि महा योगेश्वरी स्व ऊं इं ड् फ ड् स्वा हा ॥ जाप मंत्र ॥ ओं फें फ ड् महा
लक्ष्मी नम स्वा हा ॥ ये धर्मा फलाभीषेक पथी कावली ॥ ओं ह्रीं नी ल जी मु त

॥ महा ॥
॥ २२ ॥

संन्यादि०॥ श्लोक॥ ईशानेधुसर् इश्वरद्वयगतेः शूरकपालं महत् गौलागाध
तेन महामणिधरं श्रीसंखपालं स्तन॥ संतुव्यक्तमधिकाद्वयाद्वयमुषः शुचोव
दावस्थितः चण्डोचण्डघनं टनोटि
काली॥ ध्रुवा॥ पंचोपचारपूजायो
क॥ अगाह्यप्रतिभादिदर्पणागतं
समोपिवक्तुमदयः तस्मै नमः सर्वथा॥ ८॥ सताक्षर॥ इति अष्टमानुकाः अष्टस्य
ज्ञानबलिविधी॥ थननन्दाबलिस्थापना॥ कुमाही यागुमराडलसः नन्दाबलि

पा२ जवं त्ववं तये ॥ गीतमेतमंडल ॥ बलितलं खतये ॥ ओं ह्रीं आचमनं प्रति छ स्वा
हात्पादि० ॥ इन्द्रायत्पादी० ॥ ततो आदिकालित्यादि० ॥ का२ कुरु२त्यादि० ॥ खरव
त्पादि० ॥ इन्द्रादिवज्जीत्यादि० ॥ ओं नमचन्द्रवगुत्यादि० ॥ स्कविक्ष
श्मशानेवा. पर्वते कशाडने गुह्य. गा
भांजनस्थलगते भूमौ. मातंगाय. वि
समाश्रुत. कृष्णकशलीवीभत्सी. नन्दातीतविनायकः. चामुण्डाघोरीवी
भत्सी. उमादेवीतुसंभवाः. जयाचविजयान्नेन. अजिता अपराजिता. भद्रका

॥ इहस्प ॥

॥ २३ ॥

निमहाकाशी. स्थूलकाली त्रियोगिनी. इन्द्रिचन्द्रियेशिदृष्टी. लंबकी त्रिद
शेश्वरी. कम्बोजिह्वापिचैषिन्या. ग्रामावस्थितयोगिन. घोररूपामहाहृपाइष्ट
रूपाकपाहूनी. कपालमाहमालि
परशुहस्ता. वज्रहस्ताधनुतथाः म
न्य. सर्वकामार्थसाधक. योगमण्ड
गतमहाकाय. निरंजनयोगभृत्स्थिता. एवं वज्रेश्वरी आज्ञाआवाहं. सर्वसिद्धि
नां॥ ॐ कर्क २ वन्ध २ ख २ स्वादन २ सर्वदुष्टप्रदुष्टान्. इन २ घातय २ दानपतिअ

॥महा॥

॥२४॥

मुकस्य इदं काव्यसाधये इंदुं फट् फट् फट् स्वाहा ॥ देवा सुरा सर्वभुजंगमिद्रा-
ताशासुपन्ना कटपूतनाश्च. गर्ध्वयशागइजातयश्च. येकेश्चिभूमौ निवसंति ये च
दिव्यान्तेत्यकजानुपृथ्वीवीनरो इ. क
सहभृत्यसंघैः श्रुत्वा इहास्तु अनुग
दने च सुरा लये चादयाने रविमरा
वर्मेव संगमेषु. रत्ना लये चा विवासा. चापि तदागेषु च. चत्वनेषु. कुषेषु सोत्रेषु
महादधीषु. ग्रामेषु घोषेषु निरुलेषु. दवाधिवासा. शुकलाननेषु. मुन्या इये दे

॥१६॥

॥२४॥

वगृहेषु तेन सु. विहारचैत्पावडाथासमेसु. पथेषु सारासुचकुराडजरानां. यभूत
भूताचित्रगृदेवसंतिरथ्यासुविधाचचत्तरासु. येचद्वक्षसु महापठेषु. महाश्म
शानेषु. सिंहादि-ऋक्षादिवलेषु. येचवसंति घोराश्चमहानविषु. दी
पेषु दिव्याचकृता रयश्च. मेरुश्म
सुगन्धमास्य. धूपं वलिपुष्पविनेषु
दचकर्मसफलं गुगंनु. कुं२ फ२२ त्वाहा विधिथां वलिपूजा ॥ येधर्मा फलाभीषे
क ॥ हाताक्षर ॥ धनवज्रवाराहिमराडलस. सिंधुरकान्यानुहिने ॥ गीत. पूर्वद्वारेडा

॥महा॥

॥२५॥

किनि॥परीक्रमनपूजा॥॥थनदीगप्रतापद्वयआदिदेवोये॥कुमारविज्याकेगु
मसउलस॥ईलांतये॥गीत॥सुप्रतिमशिडन॥दीगप्रताप॥ईलां॥विधिध्वंपूजा॥दे
गुलमय॥देवपूजा॥मराडलाथिले
चलाहिये॥थनकीरुणपूजा॥त्वानत
जानंविष्टहुंजःविश्ववज्रस्थितहुं
सर्वकशिठभूतवज्रपाकारवज्रपंजलसरजारवीतानमध्यश्चज्वलदुःसहज्वा
लाविश्वकुलिसमयाभूमिविभाव्य॥रुटितिरुपंवज्रसत्त्वमपरावृतसत्रैलोक्यवि

कितने॥सताक्षर॥थनदेगुलिसम
संभावना॥रुटितिशून्यतानंतर
कारकिरणोज्ज्वलद्वजविलोनिः

॥रहस्य॥

॥२५॥

जया-पांनामावजुंकारविश्राजसूर्यस्थभौवकालरात्यावालिध-चरनार्धयना
कम्प-कुंद्रेत्कल्याणानावज्वलनपरिचिसंचयेकेवलयन्त्रीवनिषिलजगादिप्र
बन्धानिनीलपीतहरितमुरसव्य
हःपुतिमुखं सुभ्रभंगकुटिलरक्त
पंचकपालगताचलंतगतनवरदश
व्याघ्रचमार्धरोनीतालाचबनतवलपितोद्वज्वलत्कपिलकुण्डनतक्षकादि
तागगजकृतमण्ड-वज्रघराठाविकटनाभ्यां वज्रमुखिद्वयं-पृष्टेरर्जकनिष्ठा

तरव्यातवक्त्रत्रयोदशोत्कटनजनि
चतुरचिनेत्रा-षड्मुडालतातस्थ-
शिलःशेभूषण-समुद्रमेखरस्तेज

॥महा॥

॥२६॥

क्षयशृङ्खलिततर्जनीक्षयप्रसिन्नमिति त्रैलोक्यविजयमुद्रया स्वाभः प्रज्ञासमाप
न्नसर्वकराभ्यां कूशपाशौ वामाभ्यां कपालखट्वाङ्गदधानौ गर्जत हुंकारमुख
रहिमुखः स्वहृगत हुंकारात्पशुत
रस्फुरितदशकोठेषु समर्पयत् ॥
सारशापंचामृतादिभिः स्नानं कुर्या
त्तदनाभ्यां विहितेष्वपंचाङ्गिकसुत्रैस्त्वष्टयित्वारक्तपूष्यश्रवणां वा पूजयत् ॥
विधिर्था पूजा ॥ पुष्यन्यास ॥ फला. पं. सु. न. ॥ ओं नमो कीलय सर्वविघ्नान्मन्त्र २ हुं ॥

रस्मीभिः दसदिग्बिघ्नानां कृष्य हुंकार
आ. पा. ति. रां जन. ॥ लो. हा. गिर. शा. ॥ धन
त् ॥ नवभांजनस्थानां सिद्धार्थं रक्तच

॥२६॥

॥२६॥

इत्पनाष्टो तरशानवाणपरिनिप्य ॥ चतुस्तुर साधके प्येक्षयथाक्रममेकेकं स
मर्पयेत् ॥ ओं घघ घाघ्य २ सर्वदुष्टान्द्रुंफ ह ॥ ओं कीलय २ सर्वपापान्द्रुं
फ ह ॥ ओं वज्रकीलये महाक्रोठ वज्र ॥ धा आजापयति त्वाहा ॥ अक्षोभ्य रत्न
संभव अमिताभ अमो घसिद्धिस्त्वा ॥ बक्रोठ रूपकीलकं ध्यात्वा ॥ ॥ धनकि
॥ सा काये ॥ वाक्प ॥ ओं ज ॥ ओं सुम्भ ॥ नी सुम्भेद्रुंफ ह त्यादि ॥ किरणायना
मराउले ॥ धनकि रसाताये ॥ मुलाचार्य नृपकां पर २ सताये ॥ गीत ॥ ओं खब
जधुंफ ॥ पूर्वे ॥ पूर्वेकाका स्यादी देवता त्पाणपरिवाणानां आकर्षयन् ॥ पंचोपहा

॥ महा ॥
॥ ३ ॥

रक्षा ॥ पुष्पवास ॥ ओं का का स्या य हुं फ ह ॥ ओं य मां त का य हुं फ ह ॥ ओं च रा इ श
य स्वा हा ॥ पं. दा. पं. लु. न ॥ पद्म भां जन स. म य त स्वं वि न्दु वि ये ॥ जाप मंत्र ॥ ओं का का
श हुं फ ह ॥ स्तुति ॥ पूर्व तुरेण मथनी
शिका कतु राडान मा न्य हं ॥ १ ॥ उत्तरे
यता सगण परिवार नामा क र्षयत्
का स्ये हुं फ ह ॥ ओं वि द्यां त क हुं फ ह ॥ ओं ण ह्वा य स्वा हा ॥ पं. दा. पं. लु. न ॥ जाप
॥ ओं उ लु का स्ये हुं फ ह ॥ स्तुति ॥ उत्तरे यक्ष रा रु णं य म मथनी स्या म वर्णिका ॥ म

॥ इत्य ॥
॥ ३ ॥

हासीर्भामरुपाचउलुकास्यानमाम्यहं॥२॥पश्चिमे॥पश्चिमदिग्द्वारे॥ओंपश्चिमेश्वा
नास्यादिदेवतासगणपरिवाराणांमाकर्षयेत्॥पूर्ववत्पूजा॥पुष्पन्यास॥ओंश्वा
नास्येहंफट्॥ओंपश्चिमांतकायहंफट्॥ओंज्वालांकुलायस्वाहा॥पंजापंजु
न॥जापमंत्र॥ओंश्वानाशेहंफट्॥पश्चिमेरक्तवर्णांगीनागाधीपतिमर्दनी
॥घोराहृदासविकटश्वानास्यानमा॥म्यहं॥३॥दक्षिणे॥दक्षिणदिग्द्वारे॥
दक्षिणोत्तुकलास्यादिदेवतासगणपरिवाराणांमाकर्षयेत्॥पूर्ववत्पूजा॥पु
ष्पन्यास॥ओंसुकलास्येहंफट्॥ओंपुजांतकहंफट्॥ओंकलंकर्भेस्वाहा॥

॥ महा ॥
॥ २५ ॥

पं. ला. घं. लु. न. जापमंत्र ॥ ओं सुकलाशे हुं फ ह ॥ लुति ॥ दक्षिणोद्देशे मवरणांगी कृतांत
दुर्घहारिणी ॥ घोरघघरनादीच. नमामीसुकलानन ॥ ४ ॥ अग्रे ॥ दक्षिणवर्कोने ॥ अ
ग्रे यमदादिदेवतासगणपरिवारा
न्यास ॥ ओं यमदातीय हुं फ ह ॥ ॥
हा ॥ पं. ला. घं. लु. न. जापमंत्र ॥ ओं
मास्मादेवी कृष्णापीता भविष्यदा ॥ दहनाधीपति महं त्रीच यमदाती नमाम्यहं ॥
५ ॥ नैऋत्य ॥ द्वितीयवर्कोने ॥ नैऋत्य यमदूती देवतासगणपरिवाराणां माक

॥ २६ ॥
॥ २५ ॥

वर्षयन् ॥ पूर्ववत् पूजा ॥ पुष्पव्यास ॥ ओं यमदूती ये हुं फट् ॥ ओं तकिराज हुं फट् ॥ ओं त
क्ष्मीविन हतासनाय ॥ ॥ पंजा पंजुन ॥ जाय ॥ ओं यमदूती ये हुं फट् ॥ सुति ॥ नै
ऋत्यपीते रक्ताभाः कृव्याधीपतिम
म्यहं ॥ ६ ॥ वायुव्य ॥ वायुव्यवरकोने
वाताणामाकर्षयन् ॥ पूर्ववत् पूजा ॥
नीलदंशय हुं फट् ॥ सुति ॥ वायुव्यरक्तस्थामांगी स्वसमाधिपतिमर्दनी ॥ प्रागशि
भयरोडीचयम इष्टीनमाम्यहं ॥ ७ ॥ ईशाने ॥ ईशानवरकोणे ॥ ईशानेयममथनीदे

॥महा॥
॥२५॥

वनासगणापरीवाराणांमाकर्षयन्॥पूर्ववत्पूजा॥पुष्पन्यास॥आयममथनीयहुंफ
ह॥ओंमहावलहुंफह॥ओंकिंनिकिलायस्वाहा॥पंतायंस्तुन॥जाप॥ओंयममथ
नीयेहुंफह॥स्तुति॥ईशानेस्यामकृत्वा
देवीयममथनीनमाम्यहं॥८॥उ॥उ
वर्तिदेवतासगणापरीवाराणांमाकर्
स्त्रीषचक्रवर्तिनेहुंफह॥ओंचन्दानशत्रायहुंफह॥ओंसूर्यायस्वाहा॥पंतायंस्तु
त॥जाप॥ओंउस्त्रीषचक्रवर्तिनेहुंफह॥स्तुति॥ब्रह्मेन्द्राकादयाइष्टान्गुहमृषा

॥२६॥
॥२५॥

दिह्वेचरा॥ माहिविधं सनं नाथं उस्त्रीषचकवर्तिनमाम्यहं॥ ५॥ अथ॥ सुभराज॥ अथ॥
शुभराजमहाक्रोधदेवनासगणपतिवारानामाकर्षयन्॥ पूर्ववत्पूजा॥ पुष्पन्यास॥
ओं आः शुभराजाय हुंफ ह् ओं नागेभ्य
न॥ जाय॥ ओं शुभराजाय हुंफ ह्॥ लुति
दिर्न॥ यथेष्टासिद्धिदातारं शुभराजं न
ओम्॥ यः सत्त्वास्थापनित्यं प्रकृतिनविहृतां तोय हुंकारनादः सन्त्याविप्रोपघो
षां घनितघनघमाघोषमानन्दमूर्ति॥ संसारकारिकाराग्रहविदरुदरो दा

॥ महा ॥
॥ ३० ॥

रदुःखं प्रहता दिग्वक्त्रं क्रोधवज्री धृतक एकमलं क्रोधराजं नमामि ॥ धनो दिग्गुरु
जाविधि ॥ ॥ हसकं सिद्धमूर्त्तने अर्घपात्रादीस्त्रने ॥ धनमजातधेः नृवास्यं गु
रुमराडनदने ॥ गीत मध्ये मेरु ॥ धन
स्यं शंखतं ख पंचगव्यनक्षत्रं रक्त
कं मुलाचार्य मात्राजु निस्रसेनं ता
यवाभ्ये ॥ उद्याताद्यादि ॥ गीत गंधमराडन ॥ धनसुवर्गासनाकान त्रिकोनचोय
मंत्र ॥ ओं ओं ओं सर्वबुद्धाकिनीयवज्र १३ ॥ दिनीयगतौ ॥ वर्गानीयवज्रवैराचनी

॥ इत्य ॥
॥ ३० ॥

ये ११॥ तृतीयपक्तौ॥ हुं हुं हुं फ ह्र फ ह्र फ ह्र स्वा हा १०॥ चतुर्थपक्तौ॥ हा॥ पंचमपक्तौ॥
वं॥ षष्ठपक्तौ॥ ३॥ ध्वं विने त्रिषमस॥ दक्षिणे॥ ओं॥ पश्चिम॥ आ॥ उत्तरे॥ हुं॥ च
तुदमस॥ ओं॥ डाकिनीये हुं फ ह्र॥ पू॥ ओं॥ तामे हुं फ ह्र॥ उ॥ ओं॥ खराडरो हुं
फ ह्र॥ प॥ ओं॥ रुपिनीये हुं फ ह्र॥ ६॥ ध्वं विने षट्समस॥ ओं॥ बंबजुवारा
ह्रिये हुं फ ह्र॥ ओं॥ हां मां यामिनीये हुं फ ह्र॥ ओं॥ द्विमेमोहिनीये हुं फ ह्र॥ ओं॥
हुं हुं संत्रासनीये हुं फ ह्र॥ ओं॥ फ ह्र फ ह्र शिडिकाये हुं फ ह्र॥ नंदावर्तचतुर्दिगम
॥ तिह्रपुत्रपुत्रतये॥ धनगीत॥ ब्राह्मि अस्थित॥ स्वानतस्य भावना॥ नतः निर्मा

॥ महा ॥
॥ ३१ ॥

नचक्रे स्थितवन्कां रस्मिभिः कनिष्ठभुवनवन्ति मालाभिः कृष्णाजानचक्रं मातृ
व्यसमयदेवत्वं भावयन् ॥ फें फें फें ॥ आकर्षणमुद्रा ॥ ओं ह्रीं वज्रवाराहप्रवासन्का
राय पादं अर्घ्यं आचमनं प्रोक्षमनं
लसत्स्नानयोधे ॥ ओं सर्वबुद्धशक्ति
वैरोचनीये वज्र ॥ ओं वज्रवर्गानीये
तुह्ये ॥ ओं शक्तिनीये वज्र ॥ ओं नामे वज्र ॥ ओं खराटरो देवजु ॥ ओं कृपिनीये
वज्र ॥ अक्षरात् ॥ ओं वज्रवाराहिय वज्र ॥ ओं शंखां यामिनीये हुं फट् ॥ ओं ह्रीं मों

प्रतिहस्ताहा ॥ पादादि ॥ धनमराड
नीये वज्रपुष्पं प्रतिहस्ताहा ॥ ओं वज्र
वज्र ॥ मध्ये ॥ त्रिपद्म ॥ ओं आः हुं ॥ च

॥ १६ स्प ॥
॥ ३१ ॥

मोहिनीये हुंफ ॥ ओं हुं हुं संचारिनीये हुंफ ॥ ओं हुं हुं संचासनीये हुंफ ॥ ओं फ २
चण्डिकाये हुंफ ॥ तदा ह्यअष्टदत्ते ॥ ओं ओदिद्याने ॥ ओं पूर्णगिरीये ॥ ओं का
मरूपीनीये ॥ ओं श्री हन ॥ ओं धर्म
ये ॥ ओं महातुषकाये ॥ तदा ह्यच
ओं विरमानंदे ॥ ओं महजानंदे ॥ ओं
॥ ओं भद्राये ॥ ओं जयाय ॥ ओं सौम्याय ॥ पुनभावना ॥ ओं स्वभावसुखाद्यादि ॥ ५
तिमंत्रमुच्चार्य प्रभास्वरान्मानोप्रशिथानचितरत्नवसदात्मकं निर्मलाङ्गगणेशो

॥महा॥
॥३२॥

निर्माणाचकेत्रिदसरोरुहमध्येपीतसवहृदयोपरी. वामदक्षिणावर्तालिकालिफक्तो
उद्गसिस्तकेनपरीवृतौदिनेसमराडलमध्ये. वंकारंरक्तंतत्परिनामेन. भगवतिंबजुवा
राही. संध्यासिंदूरवर्णाशृंगारादिल
लास्याभिखरागोर्द्धमुखो. वामपाश्वेध
पानधरा. दक्षिणोपुश्रुतोर्द्धनीलवज्र
सिरासिनीलदम्भोरीमालावेस्थिता. वक्तूमूलकुंकुमसिरोरुहंप्रनिमुखंनेत्रत्रयां
सवरुधिरानना. सिरासिनरमालाश्रेणिशरालंकृता. शृंगारवीरविभक्तसरोरुहस्थ

॥इत्य॥
॥३२॥

यानकांकरुणाद्रुतसंनिवनात्परसंततितां॥ चक्रीकुराडलकराठीरुचकमेखना
मुत्रादिभिः षण्मुडामुद्रिनासप्तार्ककिंरणांरस्मिमाताभिः अर्द्धपर्यंकस्थितांभ
गवर्तिभावयत्॥ ततः निर्माणाचक्रे॥ स्थितवंकाररस्मिमाताभिः अकनि
ष्टभुवनवर्तिनीज्ञानदेवतीमाकुरु॥ अतमयदेवतीत्वंभावयत्॥ धूपमुं
गुआदि॥ ओंभागवती श्रीदेवकवर्जि॥ विद्याराजंनमस्तुते कर्तुमीदृश्यादी॥
॥ निमंत्रणा॥ लोहान्तिरशा॥ विधिभंगूजा॥ सिद्धमूर्त्त्यामाजोनाव मराडलसधि
वाद्य जाययायेधुनकाव त्वानमाताछाये चुतिहगये॥ जन्मका अदुबालद्व

॥महा॥
॥३३॥

ये ॥ ~~स्वाननपयास्यं द्राये त्रैवयः समये धाला द्राये मती विधे ॥ पुष्पन्यासः पूर्ववत् ॥ पं~~
~~ना संस्तुत ॥ स्तुति ॥ कालमेघपतलांत लोहनुविद्युदुर्गपतलांधिकनिषां ॥ सत्त्व~~
~~भांजनयुगाप्रदायिकां त्वां नमामि ज~~
~~तो बज्रवारा इति लिखिषां ॥ नमः ॥~~
~~इ ॥ ओं नमो आर्य अपराजिते त्रैलो~~
~~हे महावज्रे इंदुं ॥ ओं नमो वज्रासनी अजिते अपराजिते वस्यं करिने च भ्रामनी इं~~
~~फ ॥ ओं नमो रोचनी सोषनी कराली त्री इंदुं ॥ ओं नमो संत्रासनी मोचनी सुप्र~~

गदं विहृकि ॥ नमो चक्र कुबुरासि
॥ ओं नमो भगवते वज्रवारा इत्ये इंदुं
क्यमातरे इंदुं ॥ ओं सर्वभूतभयाव

॥३३॥
॥३३॥

भेदनीपराजय हुंफट् ॥ ओं नमो जय विजय जम्भनी लम्भनी मो इनी ये हुंफट् ॥ ओं न
मो वज्रिनी वज्रवा ए हि योगिनी कामेश्वरी रवगे हुंफट् ॥ ओं अ आः हुंफट् ॥ ओं इ इ हुं
फट् ॥ ओं उ उ हुंफट् ॥ ओं ऋ ऋ हुंफट् ॥ ओं नृ नृ हुंफट् ॥ ओं ए ए
हुंफट् ॥ ओं ओ ओ हुंफट् ॥ ओं
॥ पथिका वलि ॥ ओं र व २ र वा हि २ त्वा
हि पूजा ॥ धन घट योगिनी पूजा ॥ गीत घट योगिनी ॥ त्वानतस्य भावना ॥ ओं वं
वज्रवाराही रक्तवर्णा त्रीमुखा वज्रुजा नूतन मुख रक्त वामेनी लंदशिरो इति नामे

॥महा॥

॥३४॥

कपालखट्टपाशधारिणी॥दक्षिणोअंकुशवृक्षसुत्रकर्तिधारिणीभालिधपदा॥
यांमिनीनीलवर्णामेकमुखं चतुर्भुजावामेकपालखट्टपाशदक्षिणाकपाल
धारिणी॥मोहिनीसंचारिनीसंचाति
एकवक्त्राचतुर्भुजासवासाभेकवा
मरुकर्तिकासर्वालीजपमकुट
चन्द्रमण्डलिनी॥अन्यासूर्यप्रभासूर्यमण्डलनी॥एतेदेवीस्वस्वबीजा
द्रवएतंभूताभगवतिविभाव्य॥धूपनिराजंनलोद्गिरशापरिक्रमनपू

॥एहसा॥

॥३४॥

जा॥ पुष्पन्यास॥ ओं३ सर्वबुद्धगकिनीये वज्रवर्णातीये वज्रवैरोचनीये हुं३
फट्३ स्वाहा॥ ओं वं वज्रवाराहिये हुं फट्॥ ओं हं यां यामिनीये हुं फट्॥
ओं हूं मों मोहिनीये हुं फट्॥ ओं हूं
सिनीये हुं फट्॥ ओं फट् २ चण्डिकाय
नलाधिककलाज्वालाबलीढाग्रहा
विम्बारूपा॥ सा स्त्री सर्वकन गह्वतो दयपरा श्रीवज्रवाराहिका भावेन प्रणामा मिस
तगुरुरपि श्रीवज्रनित्यमर्तं॥ ५॥ यामिन्या खलु मोहिनी भागवती संचारिनी

ह्रीं संचारिनीये हुं फट्॥ ओं हुं हुं संत्रा
हुं फट्॥ पं ला घं सु न॥ कल्यात पुभवा
खदांगत्रिमुषी महामुषरतावाजीक

॥महा॥
॥३५॥

सर्वदा मंत्रातिशयस्तथापरासुविमजायोगेश्वरीचण्डिका ॥ चत्वारो भुजमेकस्वानन
मुषीनीलासितागौरीनी ॥ स्यामाधुमुसंधू सराश्वसननं वंदे पदतांदवं ॥ तर्पणा पूर्ववत्
ओं नमो भगवते यज्ञवाएही ये इंफ इ ॥ त्यादि ॥ यधर्मा फलाभीषेक ॥ पूर्ववत्
पथिकावली ॥ ओं स्वस्वाहि ॥ त्यादि ॥ ॥ ॥ कनकपंचकुमारीया ॥ जमंडनयागुन
पंचसालिनिगुतिनामपूजायाये ॥ गीतिगोकुदहन ॥ स्वानतस्यंभावन
॥ ओं स्वभावशुद्धात्यादि ॥ ओं अष्टदलकमलमध्यस्थामष्टदेवी गणसपरि
वारजकसिंदूरसन्निभावारुणी देवी मुंदयार्कसमप्रभामष्टादशभुजासमंविता नो

॥इत्य॥
॥३५॥

नापशराधनां॥ स्वकृपाशांकुशशय्यकपालकुलिशध्वजं॥ तथागजतथाघरा
नवमंचवरप्रदां॥ फेटकाधनुषाशंखवद्वंगसकनसंडनं॥ श्वरमुंगनवीनाचगण
धंतिचोतरेकुटो॥ नवयौवनसंपन्ना॥ त्रिनेत्रासुसुंदरी॥ मदिशक्तित्तसर्व
नदीभूताश्चसर्वगा॥ सर्ववर्णकारविभु॥ धितां वक्तुं केदविर्यात्तमानेष्टुअमृ
तक्षेत्रपाताष्टदूतिकापुकीर्ति॥ ताच॥ ओं हकारे हरेनेवशां होकारेण
धनासनं॥ ईंकारेवीजहंताच॥ अकारेणा अमृते अमृतं प्रवेशयेत्॥ तदुपरी ओं
आः हुं नैरात्मा मृत्युमण्डजे ईंकार हृदये रहि मना कृष्य॥ ओं नमो वासुदेवा देवी सर्व

॥महा॥
॥३६॥

शकरी. सही २ प्रवेशाय २ नेक मुषमहा दुती. मम कार्य क िष्यंती. आगच्छ २ सी घं
कुरु. विजय स्वाहा ॥ भूष ॥ ओं नमो वारुणी देवी सुरा सुर नमस्कृत्य तु कामो म इव
धनाम कार्य कोटि नमः स्वाहा ॥ निमं
न्यास ॥ ओं इ वि दानन्दे हुं फट् जः स
॥ ओं आ नन्दे हुं फट् ॥ ओं परमानन्दे
मामकीये ॥ ओं डा कि नी त्या दी ॥ पंजा. पं. सुत ॥ नीलनीरंजनाभाय अशोभ्या
संग संगिन ॥ भक्त्या इत्याम इयाच अक्षया भवमा मकीं ॥ नरपरा ॥ ओं नमो भ

॥ ज्ञाना ॥ निरंजन ॥ प्रतिपादि पूजा ॥ पुष्प
वीन न्दाय कम घ वर्ष मुचं २ हीं स्वाहा
॥ ओं विरमानन्दे ॥ ओं सहजानन्दे ॥ ओं

॥ इत्य ॥
॥ ३६ ॥

गवतेमामकी अमृते २ अमृतोद्भवे अमृतसंभवे अमृतप्रवेसयद्गोत्वाहा ॥ जाप
मंत्र ॥ ओं वारुणी देवी अमृतसंभवे जय वारुणी नमः स्वाहा ॥ यैधर्मा ॥ पीठकाव
ली ॥ ओं आः हं होः पिथीकाय सर्वय
यपस्मार शकशकिं न्यादि सद्यदि
ददामि ते चागते सपारिवार तिष्ठंमि
हं वं होः संतुष्टोस्मि सपरिवारस्य शान्तिपुष्टिं
वं होः हुं २ फट् २ स्वाहा ॥ दशराग यनाशर ॥ धुनिकुं भपूजा ॥ धन अष्टमानुकास

क्षराक्षस भूतप्रेतापिशाचोतं मां दा
तं मिमं बलि गंधपुष्प धूपं अक्षता
बलिं गृह्णतु घादंतु पीवंतु जियंतु जः

॥महा॥
॥३॥

मस्तानवती॥ धनतनेत्रपुगुदिगतथापनायाहं. पिथिकावलिविये॥ मीन॥ ओं
आहुंफ॥ वलीत. तंरवतये॥ ओंइं आचमनं प्रोक्षमनं प्रतिष्ठुत्वाहा॥ ततोयंकारं
गात्पादि॥ ओंइन्द्रायस्वाहात्पादि॥ पं. ला. घं. लु. त॥ ततो आलिका निप
रिनतत्पादि॥ ओंकरश्कुहश्त्पादि॥ रक्त्वहिश्त्पादि॥ ओंइन्द्रादिकु
त्पादी॥ ओंनमोऽस्तत्रयायत्पादी॥ पू॥ वृक्षायनीयस्वाहा॥ ओंचन्दोगशय
स्वाहा॥ उ॥ ओंरुद्रायनीयस्वाहा॥ ओंगङ्गायस्वाहा॥ प॥ ओंइन्द्रायनीयस्वाहा॥ ओं
ज्वालोकूलायस्वाहा॥ द॥ ओंवायस्वाहा॥ ओंकलंकभौवायस्वाहा॥ अ॥ ओंको

॥१६॥
॥३॥

मारीयेस्वाहा॥ ओं अद्दासाय स्वाहा॥ ने॥ ओं वैष्णवीयस्वाहा॥ ओं वस्मीवनहु
तामनाय स्वाहा॥ वा॥ ओं चामुण्डाय स्वाहा॥ ओं घोराय स्वाहा॥ ई॥ ओं म
हालक्ष्मीयस्वाहा॥ ओं किंकिता
गृह्णन् गृह्णन् पयः शान्तय सर्वमानु
जिनाः आदित्यः सोमः मंगलः बुधः वृ
क्षः सर्वगृह्णन् क्षत्रयः क्षराक्षसभूतप्रेतपिशाचः शकित्योपस्मारः पूटनः कटपूटनः
सर्वोपद्रवाश्च ब्रह्माविष्णुमहेश्वरः सनत्कुमारः गणपतिः महाएति इन्द्रयमवरुणः

॥ मङ्गल ॥
॥ ३८ ॥

कुबेर अग्ने नैऋत्य वायु व्य ईशान भूताधीपति महा एति स पारिवाण आकर्षय २ इन २ मथ २
प्रमथ २ भुंज २ आविषय २ वज्रमराड नम मध्ये दम २ दामय २ ध्रुम २ जय २ जल्पय २ सर्वार्थ
साधय २ ओं ढाणी ओं आहुं आः इन २ मथ २ जंभय २ स्फोटय २ सर्वदुष्टान् हुं फ
हं हृदवि हृदि हुं ह्रीं महा भीम नैऋत वरुण
नां च मारय २ ख २ खादि २ दह २ विद
सिता इन २ ज्वलिता विगृह ज्वल २ पत २ पारि विद्यास्तंभन शेदन कर्षी भर २ समभर २ ओं
कां ह्रीं ह्रीं कर २ कट २ सर्वदेवानां हृदय बन्ध २ बोधय २ १ पु २ शिमा वसमानय हृदो

॥ हस्त ॥
॥ ३९ ॥

ह्री भगवती रश्मि मांसर्वातिद्रिरत्नु इं ३ फ ५ ३ स्वाहा ॥ ~~छाये शयके पावन~~ सक ह धेन्या
दि ॥ ~~देवा सुराद्यादि~~ ॥ ~~दानपतेत्यादि~~ ॥ ~~विधिवत् पूजा~~ ॥ ~~पूर्ववत् पुष्पन्यास~~ ॥ ~~पं ता पं सु~~
त ॥ ~~नीलजिमुतसंकासंघो~~ र दुष्ट भया
मो लुने ॥ ~~नर्पन पूर्ववत्~~ ॥ ~~ये धर्मा~~ ॥ ~~पधि~~
र दुष्ट भयानकं ॥ उई के सि विरु पाक्ष भे
इं २ फ ५ २ स्वाहा ॥ ~~इति स्म शानवनि विधि~~ ॥ ~~धनकं सकरोट्टक साधन~~ ॥ ~~धनगुरुन~~
~~घराठथाय~~ ॥ ~~सिष्यन कृतांजलियाये~~ ॥ ओं नमो श्री वज्र वा रा हि संध्या सिंधु र वार्णा खर

॥महा॥
॥३५॥

करानि करानोक्तसर्वान्कान्ति सर्वकर्ति ईताः स्फुरदम्यत घृतिविभूति सर्वदोत्साविभा
चोवाप्ते दोत्सा कमलमति सितं रक्त पूर्ण ध्वजाद्या कात्यादंभरि कात्यापरिगता सिरसं नि
हिमुद्रो धइला ॥ मुण्डालि मुण्डितं गे
किरस्पवर सुभगन को धमुजाननादा
पर्यंक नृत्यं मुण्डालि घनमुदितांगी व्य
दधुसतये ॥ थाये भुथा कालि प्रभृतिः जनमानद कस्यानं दक्षनाद्याया वजोन कंवाक्ये
॥ उद्यातात्यादि ॥ चंडालि त्यादि ॥ निमिन कात्यं दोइ लय ॥ महाडल सचौ नभिनुद

मुखदल भृजं रवा दगुर्मुक्त नादं सर्वचौ द
॥ सानदा सानुगागं विपिधर सयुजा मद्र
पगन बव्यो उसां दावला गिन ॥ कंसपात्र

॥रहस्य॥
॥३५॥

पंढाजु १ तस्य मस यद्वा स्य धाये भूतये जौपन पुयके ॥ विधि थ्यं पूजा ॥ धन आदि
कुम्भ पूजा धुन काव गुरु मंडल विमर्जन ॥ मूल मंजन सिंधूर धापन पं पुष्प न्या
स ॥ थ कालि न किनं सिद्ध तय के ॥ देव पुनि पादि पूजा महनि फये ॥ धन
उपा ध्यान आगं वो पूजा या स्यं छाये कल छेये ॥ धन आदी या ह्यन ॥ पंच
बुद्ध स्व रूपं ॥ धन थ कालिन मंडल थिल के कितने गुरु अभे त्वना ॥ व
जि विमर्जन ॥ वनि ई नाये पूजा छेये ॥ धन गीत अनील ॥ वज्र वाश हि दे गुलि पाये ॥
धन गीत अनुतर ॥ जे हा स घन मन पूजा ॥ भावना धूप अघ मे निरांजन विधि

॥महा॥
॥४०॥

वत्पूजा॥ पुष्पन्यास॥ सनाइलस्यानयोमेगुलिं॥ पंजापंस्तु॥ कालमेप्रपतलांन्या
दि०॥ तर्पणपूर्ववत्॥ भगवतीमंत्र॥ जाप॥ येधर्मा॥ पथिकावलि॥ ओंस्वरखाइरत्ना
दि०॥ इति॥ धननाममकीपूजा॥ गीत॥ रक्तवर्णा॥ धूप॥ तिसं॥ जला॥ तिसं॥
न॥ विधिबन्धुना॥ पुष्पन्यास॥ पंजा॥ पंस्तु॥ जापमंत्र॥ ओंवारुणीदेवी
अमृतसंभवेजयवारुणी॥ नमःस्वा॥ इ॥ येधर्मा॥ पथिकावलि॥ ओंनमो
वारुणादेवी॥ नट॥ नृत्य॥ प्रियमइ॥ नित्यसिद्धं॥ कामयविजयभवंतु॥ सन्तोनाममहा
गणा॥ वाक्यंतु॥ नमस्वा॥ इ॥ बलि॥ इ॥ घात॥ ओंनमो॥ वारुणा॥ वलनचते॥ इ॥ फ॥ ५॥ मास

॥रहस्य॥
॥४०॥

रुधिरसुरादद्यात्॥ ओं नमो वाहणीविरश्चासयश्शीघ्रं जयवाशी कुर्यात्स्वाहा
॥ सुराजबुडिकादद्यात्॥ ओं नमो वाहणीदेवी सुरसुंदरी सुरप्रियतममना वलिते वलि
फरनीति प्रसुराविक्रिया भवन्तु स्वाहा
व्यसिद्धे अमृते २ भक्षयं करी. एदेही २
यदनुभ्रित्वा हा॥ अमृतो सप्तजम्बु
त॥ ओं नमो भागवतेश्च त्रपानाय. एदेही २ वलिगृह्ण २ पार्श्वकरो मिप्रसमयाभि
नमस्ते स्वाहा॥ क्षत्रपालवर्तिदद्यात्॥ षट्चक्रवर्तिविधि॥ इति वाहिरामासकीपूजा

॥महा॥
॥४९॥

विधि॥ ~~धनअभ्यंतारयादेवपूजा॥ गीतनलोडु॥ मानाजावेततये॥ धूपनकज्वनकं॥ मू~~
~~लाचार्य आसनसंचोनानृतये॥ भोरु॥ नृत्यापादाविघाताइवानितवसुधाचक्रनिष्कं~~
~~वदंभ॥ संभुतोबोधिहृदं॥ द्विगुणजल~~
~~दुदन्दं॥ प्रकृतिपरिभवंभ्रांतनभत्रता~~
~~वंदेरुकस्य॥ धूपनिरंजन॥ लोहान्नि~~
~~नंश॥ विधिभ्यंपूजा॥ ॥ थनंतिहंनं॥ रक्षमराउलस॥ खानतसंभावना॥ गीतद्विभु~~
~~ज॥ विधिपूर्ववत्॥ धोषयत्॥ धनचाक्रपूजा॥ गीत॥ पूर्वद्वारेतित॥ ॥ धनसचकुमारी~~

॥रक्ष॥
॥४९॥

विष्णुयके॥ विधिवत् पूजा॥ पीतवासनसिद्धा पूजा याये॥ परिमाणः नवचक्रचोये॥ नं
दावलि जवस्वद्वस थापनायाये॥ धुतिधूनकाव जवसचो नु नंदावलि पूजा॥ स्वान
तस्य भावना॥ ततः स्वहृदि अकारेण हुंकार एस्मिभिर्जादर्थं कृत्वा अकनेष्ट
भुवनं गत्वा तत्र स्थ अनादि संसिद्धि भगवती वज्रवाराही शुक्ल नंदावर्तिस्व
रूपानी भगवति दृष्ट्वा ज्ञानसत्त्वस मयसत्त्व यो र्के कृत्वा मनो मयीभि
श्च पूजयत्॥ फे ३॥ ओं भगवती वज्रवाराही प्रब्रह्मस्कारयपायं अर्घ्यं आचमनं प्रति
घत्वा श॥ ज हुं वं हो॥ बलिमाना॥ ओं आ हुं हो गृह् २ गृह् २ पाय २ आनय २ सर्वमानकथ

॥ महा ॥
॥ ४१ ॥

शत्रुसायनी माहेश्वरी कोमारी वेषा बीजादी ईश्वरी चामुण्डा महालक्ष्मी जया विज
या अजिता अपराजिता आदित्य सोम मंगल बुध हस्त तिथि शुक्र शनि शर राहु केतु जन्म
सर्वशत्रु सर्वनशत्रय क्षराक्षम भूत
पूत पिशाच शक्तिनी पत्मा पूतन कट
पूतन सर्वोपद्रवाश्च बुद्ध्या विष्णु महेश्वर
रसनकुमार गणपति महाकाल ईश्वर
मवरुणा कुबेर अग्नि नैऋत्य वायु रा
क्षसाधिपति ईशान भूताधीपति सपारि
वारान् आकर्षय २ इन २ मथ २ प्रमथ २ भुंज २ आविषय २ वज्र मण्डल मध्य दम २ दाम
य २ धुन २ विधुन २ जय २ जल्पय २ सर्वार्थ साधय क्रोधनी हुं आ इन २ मथ २ भुंजय २

॥ इत्य ॥
॥ ४१ ॥

स्फोटय २ सर्वदुष्टान् हुं फट् इह विहृद् हुं ह्रीं महाभीम भौव रूपं हु २ हुनु २ प्रहृ २
सर्वविघ्नविनायकानां च माय २ खख स्वाहि २ दा २ विदा २ छिंद २ पामं त्रन २ य २ जे
चान्यस्तनुप्रसिता इन २ ज्ञाता ज्वालित
रिभ २ संभ २ ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क २ सर्व
मेव समानये हृद् ह्रीं भगवती १ क्ष २ मां
रांजन ॥ विधि ॥ पूजा ॥ पुष्प त्याग ॥ पं ता ॥ पं स्तु त ॥ नंदारविपातदि ॥ शपाविये ॥ द
पातदिपाविये ॥ पूजा ॥ शपावायं जुल ॥ धनजंन पूजा ॥ त्रिकोण षट्कोण सत्त्वां बोधे

॥ महा ॥

॥ ४३ ॥

॥ ओं सर्ववृद्धगकि नीये वज्रपुष्पे आहुं फट् स्वाहा ॥ ओं वज्रवर्णा नीये ॥ ओं वज्रवैरोचनीये ॥

॥ मध्ये ॥ त्रिपद्मस ॥ ओं आहुं ॥ चतुर्दलस ॥ ओं गकि नीये ॥ ओं लामे ॥ ओं खराडो रोहे ॥

ओं रूपिनीये ॥ खन्कोशास ॥ ओं वव

नीये हुं फट् ॥ ई ॥ ओं ह्रीं मां माहिनीये

॥ प ॥ ओं हुं हुं संत्रासिनीये हुं फट् ॥ नै ॥

ग ॥ ओं ओडि गाने वज्रपुष्पे आहुं फट् स्वाहा ॥ पू ॥ ओं पूर्णागिरीये ॥ उ ॥ ओं कामरूपिनीये ॥

॥ प ॥ ओं श्री हतकाय ॥ द ॥ ओं धर्मकाय ॥ अ ॥ ओं संभोगकाय ॥ नै ॥ ओं नीर्माणाकाये ॥

जुवाराहीये हुं फट् ॥ पू ॥ ओं शंखायामि

हुं फट् ॥ वा ॥ ओं ह्रीं संचारिनीये हुं फट्

ओं फट् श्चरिडकाये हुं फट् ॥ अ ॥ अस्सी

॥ हस्त ॥

॥ ४३ ॥

वा॥ ओं महासुषकाय॥ द॥ धनविधिं पूजा॥ भक्त्या॥ तत निर्माणा च केत्यादि॥ तिरां
जन लोहनिशा॥ पुष्पन्यास॥ पं० ला० धं० लु० त॥ काव मेघपतां त्यादि॥ तर्पण॥ ओं नमो भ
गवते वज्रवाराहीत्यादि॥ ६१॥ तत्रा॥ धर॥ धुनिजं त्रपुजा॥ ॥ धर॥ कुमारी॥ का
नवनेयान अश्विन॥ दासो स्वा॥ ताये जो॥ नरुं॥ श्री वज्रदेवीया॥ मूलमंत्रं न॥ जाप
यास्य॥ उपा॥ पानुन॥ काये कल द्दये॥ मंत्र॥ ओं नमः श्री वज्रयोगिन्यै प्रविश्य
ममम शिडने शुद्धया ढोषिता मया प्रतिगृह्णतु प्रसिद्धमे॥ कथा व्रह्मे॥ कोपनि सतस्य
नृणां यदे॥ धर॥ दुःखा न्यासमात्र॥ लक्ष्म्यं॥ वसुधा माय॥ विष्णु चक्रे॥ मराठल चो यान

॥महा॥

॥४६॥

मागुलि.आभमयभीतास्प.विज्याचके॥ ~~थनमात्राजुन.कुमारीपूजायाये॥~~ ~~थनखा~~
~~नतसंभावना॥~~ ओंस्वभावशुद्धासर्वधर्मानांस्वभावशुद्धोहं॥ नतःस्वहृदिअकोरेण
सूर्यमण्डलंतदुपरिवंकारेणआनि ~~कालिद्विगुणिततत्परिनामेणतानालो~~
कधातुगत्वाअकनिष्ठभुवनअनादि ~~संसिद्धिवज्रवार्णहिमण्डलेदृष्टातत्रता~~
नसत्त्वस्कीभुतंविजितयेत्॥ ~~निशंजन.~~ ~~लोहान्निःशा.ताचा.मतफंतोये॥~~ ~~धनदे~~
~~वी.अघायके॥~~ अर्घ्यास्प.अभीषेककाये॥ ~~थनमात्राजुन.देवीस्तसिंधूर.द्वये.अंजना~~
~~भीषेक.मूलमंत्रनतये॥~~ ~~थनयेकमुख.बोगा.कर्णपता.वस्त्र.कोखागा.दहनये॥~~ ~~ध~~

॥१६स्प॥

॥४६॥

ननुप्यमुद्रान्तियके॥ मंत्र॥ ओं वज्रबैराचनीये हुं फ ५॥ चक्रा॥ ओं ह्रीं ह्र ह्र हुं हुं फ ५॥ हुं
दल॥ ओं ३ सर्वबुद्ध शक्तिनीये वज्रवर्णनीये वज्रबैराचनीये हुं ३ फ ५३ स्वाहा॥ कंधि॥
ओं ह्रः नमस्ती स्वाहा॥ ओं बोषट ह्र हुं हुं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं फ ५॥ स्वाहा॥ मेखला॥ थ
ये अक्षत वज्रजो ह्यं देवीयामूलमंत्र
पाद्यादि पुष्प न्यास॥ पूर्ववत्॥ गीत कवने सकरज॥ पं ला पं सु न॥ काल मेघपत
लां न्यादि॥ तर्पण पूर्ववत्॥ जाप ये धर्मापथिका वलि ॥ खरखादि २ न्यादि॥ ६

॥महा॥
॥४५॥

शाणा॥शनाशर॥~~अस्मत्मानं नंदावलिबिजे॥॥~~थनमंडलधिनेः किनेने॥~~ओंआः हुं~~
~~श्रीमन्मदि०॥~~लोत्र॥योगामृतैकलसपानविशुद्धचित्तं पीठादिदेशगमने नविशुद्ध
देहं॥श्रीपीठमध्येवलमराडलचक्रनाथं वन्दे सदागुरुवरं सिरमानतेन॥१॥
॥श्रीचक्रसंवरसुसं वरवज्रशक्रवीरेश्वरीप्रववीरगणाधिराजः॥कोलानना
ललितबाहुयुगोपगुह्यकारुण्यनिभानमामितरांघ्रिपद्मं॥२॥~~शनाशर॥श~~
~~मापन॥थनसितामलदकोछाये॥मंडवधये॥सम्बनछाये मोहनिछाये॥॥थनगु~~
~~ह्नमंठथास्यं मराडल दवाकडने॥~~ओंप्रविसतुभगवतमहासुखपुंवरं सर्वसि

॥१६॥
॥४५॥

क्रिसुखपदं पद्मो सुखोत्तमसिद्धर्थजः इव द्रोणसिद्धिस्तु ॥ त्वाकस्तान्जो नं द्वाखने
पश्चिमसचोत्ताय ॥ पूर्वया द्वाखने ॥ ओं वज्रो पाटये समय प्रवेसय इं ॥ ध्वमं च न च नु द
खने ॥ देवने चो न न स्वानमराडन सदाये भावयाये वाके ॥ ओं पामसु
घाशय सुललित विलासन मामिन मैत्रो न मामिजः इव द्रो. दी दी २ प्रति छ
कुसुमांजलिनाथ होः ॥ नृप सुडाका स्यं थमनं छुये ॥ धममराडन स्वचाकु
उले ॥ गुरुमां नु यात आवेसतया निहं ॥ ॥ आकाशोत्पादचि त्दत्तादनादिनिध
नपरा. महावज्र समय सत्य अक्षो भवजु प्रतिधमे. सवोत्तममहासिद्धि माहैश्वर्या

॥ महा ॥
॥ ४६ ॥

दिदेवतः सर्ववज्रधरो राजा सिद्धिमेपरमाश्रयः निदोषः साश्वतश्चासि माहेश्वर्यादिदेव
ताः सर्वरागनारागोराजः तन्वमेतिद्धिमे भगवन् महा रागो महारतः अत्यन्तशुद्धधर्माग्रजो
दिमुक्तसंथागतः समतुभदुसर्वात्मा
द्धिः माहेश्वर्याग्रमुद्रया ॥ सिद्धिवज्र
त्वमनोव्यापिः सर्वसत्त्वहृदि स्थितः स
येन सत्येन स ज्ञानं प्रज्ञोपायात्ममण्डलं तेन सत्येन मेनाथं कामात्वं परिपूरयत् ॥ थ
नमण्डलसहस्रकनकेने ॥ प्रतिविम्बुसमाधर्मात्पादि ॥ थन धुंकेने मनकेने ॥ त

॥ ४६ ॥
॥ ४६ ॥

थागन्वनिर्घ्याता इति सत्येन मराडलं ॥ प्रतिविम्बस्फुटसिद्ध्याः सर्वपश्यत्चकल्यव
ना ॥ ॥ योनेचतुशरवः कुमारीयातः समेतं चतुलाः कनेधूनकावः थवः आश्रमसचो
ने ॥ कातुचक्रये ॥ ॥ थनदेवयातकु
वक्रिये ॥ मेवयातमन्यवनि ॥ थामसं
पंचसादिन्यागुलिं गुरुनलधनयासं
नकेतो नकेः त्याहस्येनं धूनकावः थवः २ थामसं गुरुथापिं पात्रदेछास्यंतयेः मेव
यातविद्ये मापवनि ॥ थनसहभोजन ॥ देवयातमातको वोनय ॥ कुमारीवः गुरुगु

॥ महा ॥
॥ ७ ॥

निससयास्तथायेभुस बोन्हेचाके. उपाध्यागुरुप्रमुखं. सकलस्वातं. लपतेवोतये.
धूनकात्र. स्वधनयास्पं. मात्रान. कुमारीयात. पंचशासयातके. गुरुप्रमुखं. सकलस्वे
नभोजनयाये. मानकोनयके. मूचुपयं
नंलि. कुमारीयागु. पंचतालिन्यागुलिं.
॥ कुमारी. द्दसयास्तवियुमान. धुनिधू
भुजक. कलंखछोये. ॥ गीत. धूमां गरी. शुभं. नंदाभुजा. कुमारीयात. हेचायके. ॥ देवयात
नसलातये. नंदाभुजाछोये. धनमुखगुडि. गवचगालविये. दशशाविये धनपरमेश्वरी

तंमाल. ॥ गीत. समहिमंडल. शुभं. ॥ ध
जजमानपनीस्पनं. परिकमनलहियके
नकाव. नोसियके. कुमारीयागु. थाये

॥ १६५ ॥
॥ ७ ॥

विसर्जन॥ मंत्र॥ ओं स्वभावशुद्धा सर्वधर्मीनां स्वभावशुद्धोऽहं ज्ञानसत्त्वस्वकायपवेत
 यत्समयसत्त्वभुवनं लीपिचिंतयन्॥ देवीयापुष्पमुडालिकायां नंदवलिमतये धन
 जनमाननं हाथ हजोलपं भ्रमाफोने
 लवने नंदवली धानलसुसवाये॥
 धनपरिक्रमनं केशाभिषेकं मकराभा
 नं देवगुरुआदिं मालकोयास्तविये॥ गीत जयं वा छलि॥ सिद्ध मोहनि तियके
 ॥ धन बाहिर कंसक रोट रुदोये॥ गीत मुन्वा ल शुभं दोये॥ धन पंचसाली ग्राह

देवी लीहा विष्णाय के धूप दीप लख
 ॥ इति श्रीमद्यकुमारिपूजाविधिः ॥
 धेक धनका न चट योगिनी सिंदूरस्वा

॥महा॥
॥४८॥

यत् ॥ गीत हाडा भारा ॥ मूल नृत्य ॥ श्लोक ॥ चण्डालिक कलली लया निज पदा दुघ्राति
ता विश्वभो. विश्वं भोरी महासुख विरचयं. शिंखर बोदो दया ॥ अंबो जा गीतो महासुख
पे निर्वति पदं प्राप्ति मिध ते जया. रागा
महे ॥ १ ॥ दशम जयये ॥ धन गीत माल
संहर ॥ गीत. जयं २ ॥ धन जं च मालि.
त ॥ धन लेश मंडल पाता. लव लहाये ॥ सिंधू जाना ॥ गीत ॥ अस्त नाश ॥ धुनि धून का
व ॥ अस्त पीठ नाम का ल्यं. वलि कोये ॥ गीत. चंडु गुप्तान ॥ धान वलि. ईकु वलि जेये

॥रस्य॥
॥४८॥

॥ ~~धनजमनिकापसें मात्रा आवेसत याव दुहावने ॥ मूननृत्ये ॥ गीत. धंवि~~
नि ॥ ~~श्लोक ॥ संपुज्यं सर्वजगतमनो रथपदं. सर्वतरा नाजिना. पित्वा सर्वविकल्प~~
मोहकरां. दकिनि हेरुकादिना ॥ ~~यइचकुं परिवर्तते. जिनगुणाज्ञान~~
द्वय. मोक्षहेपदं. यस्यानस्य कृपा ॥ ~~तुरहस्यमनसा. नित्यं प्रसंसेवहे ॥~~
१ ॥ ~~धनमुद्रातोये ॥ सताक्षर. खंघां~~ ॥ ~~गनधिस्यं. धनके विसर्जन ॥ हुं आ. ओं~~
आर्जे मु ॥ ~~गीतसोदसहाय. गुंत्यं ॥ पं. ता. वं. लु. सताक्षर. शमापन ॥ एवं जनग्राह्ये~~
त् ॥ ~~धनगुरु. सज्वनविये ॥ दसपत्रतये ॥ धनकोना ॥ गराचक्रयाये ॥ त्हापांथा~~

॥महा॥
॥४२॥

पिंग्व १ स्वान ॥ मूलपात्रतसंपूजा ॥ थनवडुविस्पंथलायेविचे ॥ जनमानयान कीगनन
के ॥ गाथा ॥ ओं नमोस्तुतिनवरचक्रनायक नमस्तुते सम्वरनायक ॥ नमस्तुते शाकिनी
लामिकेतथा नमस्ते रूपिनी ॥ खराडरो हिकात्रिचक्रविशसितवीरणी गणा
काकातनाथा श्वर सन्तपारिका ॥ वीरे श्रीवीर गणानमामि हंति ॥ शेषसंकु
शहरं नवदिदं ॥ पीठोपपीठमुक्षत्र पक्षत्रं शेन्दो पछेन्दो इति वासिदेवी
मेलापकोमपमेलापक वासिनी स्तथा ॥ स्मस्तानके वीतथो स्मस्तानके ॥ नमो
स्तुते पारवक्षत्रपालिके ॥ उपवीरवष्टामूनिभिः ससंघा बुद्धं च ॥ धर्मं च ॥ संघानाथा

॥२६स्प॥
॥४२॥

नमस्तुतेनस्त्रेणगाचक्रवर्तिने॥ ~~थनअन्नशोधन॥~~ ओंनमोसमन्नवुद्धानां वज्रोव
हंतेजोवलंददेस्वाहा॥ ओंआः हुं॥ ओंपरमानसमाधिध्यानपिननेस्वाहा॥ थ
नमोजनयाये॥ ~~तालल्हाये॥~~ गीत॥ कोलाई॥ ~~थनमूलपूजा॥ पात्रगृह~~
~~न॥~~ गीत॥ उदिता॥ ~~थनकलंस्वक्षे~~ ये॥ गीत॥ धूमांगारी॥ नोचायके॥ ब
पुयके॥ ~~नसलाकाये॥~~ स्नानकोका ये॥ ~~गुस्तआदिं॥ स्नान॥ सिंधूर॥ कोखा~~
विषे॥ ॥ ~~थनशेखबलिविषे॥~~ उथभराड॥ ~~दसपत्रतये॥~~ शेषदान॥ ~~मुखतु~~
धी॥ ॥ ~~इतिश्रीकोलास्यामहारहस्यसिन्दूरार्चनपूजाविधिसमाप्तः॥~~ ॥

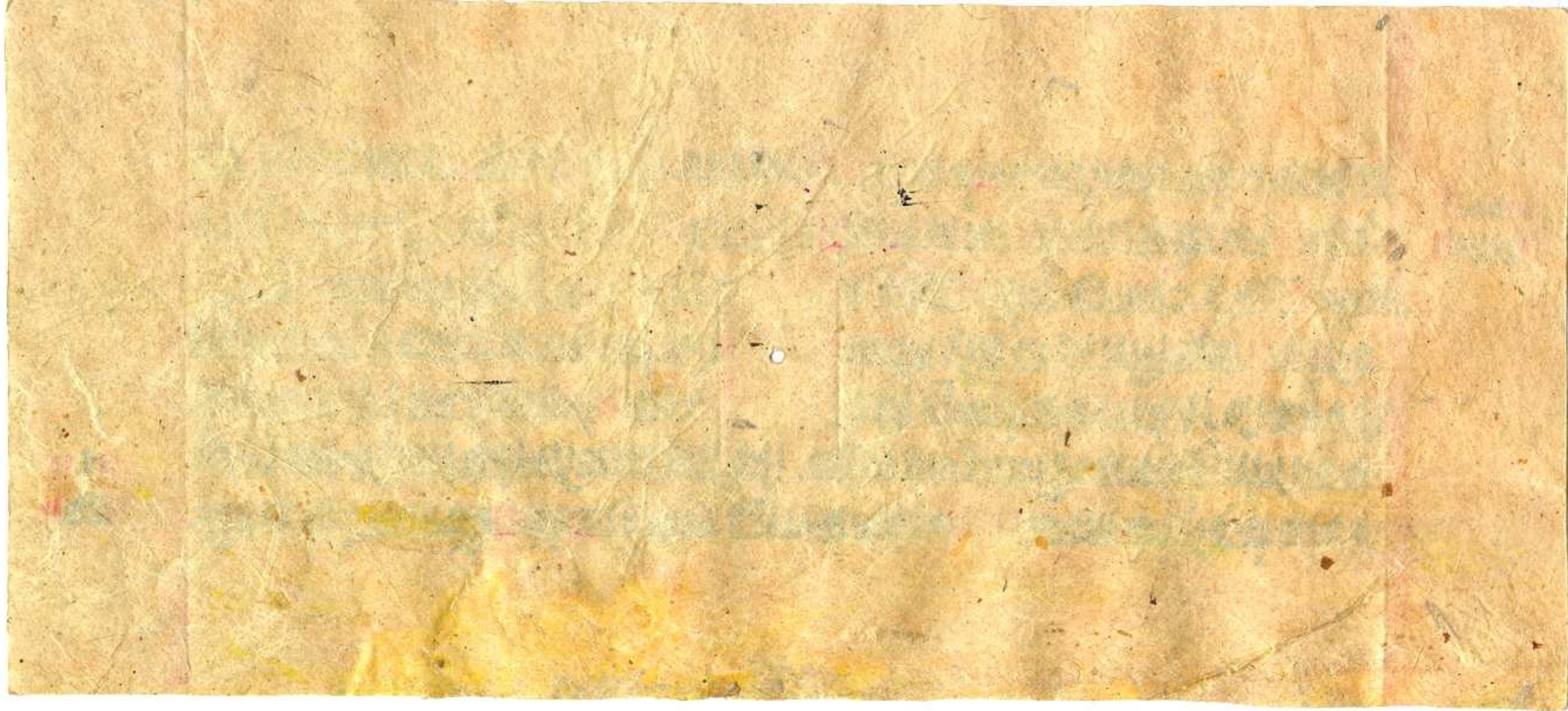
॥महा॥

॥५०॥

शुभमस्तु सर्वजगतां ॥ शुभसम्बत १९२५ नेपालिसम्बत १०६० आवणमासे सु
क्लपक्षे दशतिया भरुनितभत्र वलियानयोग मंगलवार थोखुन्दु संपूर्णसिधये
कादिनजुल ॥ ॥तिरिवितम् मरवंवा हाल रत्नकीर्तिमहाविहारया श्रीव
जाचार्य श्रीवज्रदेवीसेवक हाकिम् दिहारत्ननंथवनचोयानयाजुज थ
सफुसुनानं लोभपापयायेमदुलोभ यातसा लिपायाजन्मस लायजुयाज
न्मजुयु निशानयातसा श्रीवज्रदेवीं शायायु ॥ ॥अग्रपुष्टकटिगीवा वद्धमुष्टिर
धोमुरवं ॥ कष्टेनतिरिवितं विधिं यन्नेनपरिपालयत् ॥ शुभम् ॥

॥१६स्प॥

॥५०॥



॥ वज्र ॥

॥ १ ॥

ओं नमः श्री कोला स्याये ॥ ओं आ हुं श्री म वज्र सत्त्व त्वादि ॥ ॥ उत्पात भंग र हितं वर दे ह
धा शि रक्त प्रभा विज यिनी च त्रिधा तु रूपिनी वज्रांग शागुरा गौ स मलं कृ तां गी मत्प
र्चया मि सततं जननी जनानां ॥ तत ऊ
रुप मा तव्य ददा कार जगत् सर्व करि
ग्वं धन ॥ ओं सुं भनी सुं भे हुं फ ह ॥ ओं गृ
नय हो भग वन वि धारा ज हुं फ ह ॥ इत्यर्वादि ग्वं धनं कृत्वा ॥ मंत्र पात्र शोधन ॥ ओं ह
हो ह्रीं अखं स्वाहा ॥ पुनः हः हो ह्रीं अखं स्वाहा ॥ ओं सर्व भक्षकामिनी सर्व भक्ष स्व ध

॥ समा ॥
॥ ५९ ॥

नीगुह्यक्रीति क्रोधेश्वरी सर्वद्रव्यव्यापिनी श्वधय २ हुं ॥ ओं इकारे हरते वर्णा हो
कार गंधनासनं इंका रवीर्य इन्ता च अकारेणा मृतं पशेत् ॥ ओं अमृत रूपं पुबेशय
हुं ॥ ततो वाम कार्म अरु रूपं च दल कम
कारेणा सूर्य मण्डलं वाम हस्ते अकारेणा
ला ॥ इंमो ॥ द्युला ॥ इंमो ॥ अमुना ॥ हुं हुं
खवला हातिन पात्रयाथ कयाव मोडस हाये ॥ ओं ३ सर्व बुद्ध शाकि नीये वज्र वर्णानीये
वज्रवैरोचनीये हुं ३ फट् ३ स्वाहा ॥ अंगन्या म ॥ ओं वं ॥ नाभि ॥ हांयां ॥ हृदय ॥ इंमो ॥

॥ नमः ॥
॥ २ ॥

मुख्य ॥ हूं ॥ कपाल ॥ हुं ॥ सीर ॥ फ ॥ सर्वोम ॥ इनं मूलपात्रयाध्वकयाव मंडलपा
ना पुजा भक्तसहाये ॥ त्रिपताका मुद्राना अधिष्ठान याये ॥ ओं हुं स्वाहा वज्र ओं हो स्वा
हा पंठ वज्र सत्व संगहात वज्र रत्न मनुत ॥ हुं वज्र धर्मगुहायिने वज्र कर्म कुलोद्भव
ओं ह्रीं ज हुं ३ ॥ ओं ह्रीं राज हो ॥ पंचो
त्पादि ॥ शंखाधिष्ठान ॥ ओं आ हुं ॥ व
अधिष्ठान ॥ ओं अका रे मुख सर्व धर्मा नां मा धनुत्पं नत्वा ओं आ हुं फ ॥ स्वाहा ॥ न
राष्ट्राधिष्ठान ॥ ओं आ हुं ॥ त्रिकामाधिष्ठान ॥ ओं स्थानं मे रक्षे हुं ॥ ओं योगं मे रक्षे

॥ समा ॥
॥ ५२ ॥

ॐ॥ ओं आत्मानं मे रक्षे ॐ॥ ओं स्वभावश्च ज्ञासर्वधर्मानां स्वभावश्च भुङ्क्ते ॐ शुभं तां ज्ञान
वज्रस्वभावत्वं को ॐ॥ इति मंत्रमुच्चार्य प्रभास्वरान्मानो प्रतिधानचित्तात्नवसदात्मकं निर्म
लाङ्गणादेशनिर्माणाचक्रं त्रिदशगो
लावर्तलिकातिपत्तेः उद्भिदिरस्केन
तत्परिनामेन भगवति वज्रवाराहं सं
ॐ स्वभावं मूलवक्त्रादक्षिणो कालोत्पाभिषणोर्ध्वमुखी वामपार्श्वे धृतस्वच्छांगवामकर
गृहीतस्तूर्णपूर्णा कपालधरां दक्षिणो प्रभृतोर्ध्वनीलवज्रकर्तिधरां षोडशवर्तमां गीति

॥ वज्र ॥

॥ ३ ॥

वशनांसिरसिनीलदंभोरीमानावेष्टितां मुक्तनीलकुंकुरुमिशोरुहप्रतिमुखं नेत्रत्रयां
श्रवणधिराननांसिरशिखामानाश्रेणिहारलंकृतं शृंगारविभक्तरोडहास्यभयान
कांकरुणाद्रुतसांतिनवनात्परसान्वि
दिभिः घनमुडामुडितां सत्तार्ककिराणां
तां भावति भावयेत् ॥ ~~आकर्षण~~ ॥ त
लाभिः अकतिष्ठभुवनवर्तिनी शानदेवती मा कृष्य समयदेवति त्वं भावयेत् फे ३
ज्वालमुडां दर्शयेत् ॥ ओं आर्द्रा वज्रवा एषा प्रवर्तत कारायणार्धार्ध आचमनप्रोक्ष

तंचक्रिकुण्डलकठिरुचक्रमेषलासुश
हरत्तिप्रभास्वरामनोअर्द्धपर्यंकस्थि
तः निर्माणाचक्रस्थितवंकारं रत्निमा

॥ समा ॥

॥ ५३ ॥

नमो नमो स्वाहा ॥ जडुं वं हो ॥ पुष्पत्वात् ॥ ओं तर्ववुद्रगकिनीये वज्रपुष्पे आहुं फट्
स्वाहा ॥ ओं वज्रवर्गानीये ॥ ओं वज्रवोचनीये ॥ मन्त्रे ॥ निदन् ॥ ओं आहुं ॥ वज्रुर्द
ल ॥ ओं शकिनीये हुं फट् ॥ पू ॥ ओं लामे ॥ ॥ उ ॥ ओं खराटोहे ॥ प ॥ ओं रुपिनीये
॥ द ॥ षट्कोणे ॥ ओं वं वज्रवाराहिये हुं ॥ फट् ॥ पू ॥ ओं शं वां यामिनीये ॥ वा ॥
ओं ईं मं मोहिनीये ॥ वा ॥ ओं ईं ईं सं ॥ चारिनीये ॥ मै ॥ ओं हुं हुं सं त्रासनीये ॥
॥ सो ॥ ओं फट् २ चण्डिकाये ॥ अ ॥ तदास अहदने ॥ ओं ओदियाने ॥ पू ॥ ओं पूर
गेशीये ॥ उ ॥ ओं कामरूपिनीये ॥ प ॥ ओं श्रीहनकाये ॥ द ॥ ओं धर्मकाये ॥ अ ॥

वने सर्वभूतभयावहे महाब्रह्मे इहं फ॥ ओं नमो भगवते वज्रासनी अजिते अपराजिते
वश्यं करिने न भ्रात्रिनी ये इहं फ॥ ओं नमो भगवते रावनी शोषनी क्रोधनी कालिनी
ये इहं फ॥ ओं नमो भगवते संचालनी ॥ ॥ मारनी तुषभेदनी पाजये इहं फ॥ ओं
नमो भगवते जय विजय जन्म निस्तं ॥ ॥ भान्मो हनी ये इहं फ॥ ओं नमो भगव
ते वजिनी वज्रवाराहि योगिनी कामेश्व ॥ ॥ शिवगे इहं फ॥ ओं अजा इहं फ॥ ओं
इहं फ॥ ओं इहं फ॥ ओं अमृ इहं फ॥ ओं लज्ज इहं फ॥ ओं एहं फ॥ ओं
ओं ओं इहं फ॥ ओं अं अ इहं फ॥ नतः कोले मुखमस्तकं स्वस्तिकं वामावर्तणं भुमं

॥ वज्र ॥

॥ ५ ॥

नमोऽस्तुतं ध्यायात् ॥ तदनुदेवी कमलोदल गुदनाभि मध्यां नोर्ध्वमोदयामध्ये वंकारं
रंक्त ॥ ओं ३ सर्वबुद्धाकिनीये वज्रवर्णानीये वज्रवैरोचनीये हुं ३ फट् ३ स्वाहा ॥ ई
ति मंत्रेण मदन १३ मकर ११ क्षिप्र १०
रजं विन्यस्य तच्चक्रं वामेनाति केन च
एषा लीरुपंतिश्च लं प्रदापवत प्रज्वाल
धारा मात्मापित पश्यतु ॥ इति चण्डालि चक्रम् ॥ पश्चात्तिमारा चक्रा वंकारूपि ईदु
विंदु स्थिताना दो देवी रूपामृणा रं नं त्रस्तु स्वास्तु रेखा ई गते काय धर्म संभोग चक्र

संख्या मिलित पक्ति त्रय स्यार्धः शका
यमातभिश्च लोपमां पसेत् ॥ एतदेवी च
मानं महा सुवचकं उद्गमुवन श्रवदमृत

॥ समा ॥

॥ ५ ॥

मुनि धमहासुखमहापद्मतया कोलमुधेमहासुखमयस्वस्तिवं प्रवेश्यमहासुखचक्रं
गन्धामहास्वातावलिबिलिनसंदिदधटकुम्भवत्श्रवदभूतधारानाम्मानस्त्रापयं
नीस्फटमेवायन्त्रित्यपदेविश्रामयत्
निचितचक्रं । ततः सर्वकरोरुदितिभा
रजं सूर्यमाकाधिस्थितं तथैव बामहस्ता
नाधिस्थितं भावयत् । तयोर्मध्ये हाताक्षसुत्रतथैव देवीरुपाज्ञानसत्त्वास्कीभूतं विचिं
त्य ॥ जापसोधन ॥ अकस्मात्स्वाकार असो हि अमंत्र विशाह्मगनी अवुशंय अलिक

पूर्ववत् ॥ आपाप्रपं ताः प्रस्तुत ॥ इ
वितांगुतीपंचसुचिकं वज्ररूपं आका
गुनी । पुष्यताकारं अकारं चन्द्रमराड

॥ यजु ॥

॥ ६ ॥

शिजोईयोईनि साह्रुओं पय २ महाज्ञानं सर्वबुद्धमईभवे ॥ ३ ॥ फ २ ३ हो ३ अखं स्वाहा
॥ इतिजापसोपन ॥ ततजापयोगा ॥ पूर्वसत् ॥ ॥ आयापुर्वं जा ॥ मं ॥ सु ॥ न ॥ ततबलि
आवना ॥ यंकारेण वायुमराडलोपरि
डिकोपरि स्थित पद्मनां जनविचिंत्य त
लां मां पां तां वंकारजातं पंचामृत पंच
ताम्रितापविनितं दृष्ट्वा तदुपरि आका ॥ जनितमिमांशान्तरिताक्षोगुणवामृतमयशुक्र
खण्डां ततवाक्यविनितं पाशम सदृशं तभी श्रयंसिति नूतं विचिंत्य ॥ तदुपरि ओं आ

॥ समा ॥

॥ ५६ ॥

इं इत्यक्षरं त्रयं दृष्ट्वा तदा स्मिभिश्च दशदिगवर्तिवीर्यं श्रीं नाना नामृतमातीत्यतश्च
वाक्षो रौ वाधितिष्ठेत् ॥ ओ आ इं ॥ गरुडमुद्रां दर्शयत् ॥ फेकारं च यपठत् पूर्वकं भग
वति मां कृष्य पूजितमस्थापयेत् ॥ पू ॥ ~~ववत् ॥ आपा पू पं ता पं सु त महा व~~
ली ॥ ततो आति क्रांति पीरितं च त्र ॥ ~~सूर्य करद्वयांतागतं हुंकारं दृष्ट्वा ॥ अं~~
न्योन्यानुगता सर्वधर्मा ॥ ओं परास्य ॥ ~~रानुगता सर्वधर्मा ॥ ओं अत्यन्तानुगता~~
सर्वधर्मा ॥ देव्यप्रमाणां समयप्रमाणां तदुक्तवाचं च पराप्रमाणां ॥ एतेन सत्येन भवे
पूरेता देव्याममानुयद्देन भुता इं नः शुक्लैकशुक्लवज्रजिह्वां ताडिका विभाव्य ॥ ओं
॥ २ ॥ पूषवे शयत् ॥ ओं कारादिकमपि कुमशो विलित लोभं प्रक्षेपे

॥ यजु ॥
॥ ७ ॥

वज्राल्लो जहं बंदो वज्रवाहादि समयस्त्वं हस्य हो ॥ मातामंत्रेन वलिंदयात् ॥ ओं र व २
खादि २ सर्वयशराशसभूतप्रेतपिशाचोन्मादापस्माराडाकडाकिन्यादयश्च इदम्वति
गृहं तु समयरक्षंतु समयसिद्धिमेष्टु य ॥ ॐ तु यथैव तथैव भुजार्थपी वार्थजिष्ठ
मातृक्रमममसर्वसत्त्वानां च सर्वाका
तुहं फ २ स्वाहा ॥ पं ता पं तु न ॥
उभम् ॥ ॥ सन्वत् १५५ नेपालिसन्वत् १०५० भावरासुक्कया १२ खुन्दु मखं वाहातया श्रीव
जाचार्य हाकिम् हिराल्लनं थवत चोयातया जुल ॥ सुहो वाम सुहो वाम मदीयेन दीयते ॥

॥ समा ॥
॥ ५ ॥

आशा सरस्वती

2680

ASHA ARCHIVES

